अख़्लाक़ व आदाब सिखाने वाली एक मुख़्तसर व जामेअ़ तह़रीर

Aadabe Deen (Hindi)



الْاَدَبُ فِی الدِّیْن

तरजमा बनाम

आदाबे दीन

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई

अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.

مكتبة المدينة
(دعوت اسلامی)

المدينة العلمية
(دعوت اسلامی)
شعبہ تراجم کتب

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(आदाबे दीन)

येह किताब (**आदाबे दीन**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,

अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

Mobile: 09374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा

उ़न्वान	सफ़्हा

अख़्लाक़ व आदाब सिखाने वाली एक मुख़्तसर व जामेअ़ तह़रीर

اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن

तरजमा बनाम

आदाबे दीन

मुसन्निफ़

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی

अल मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक–त–बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن

तरजमा बनाम : आदाबे दीन

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

मुतर्जिमीन : म-दनी उ़लमा (शो'बए तराजिम)

सिने त़बाअ़त : ज़ी क़ा'दतिल ह़राम 1434 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : **29** जुल हिज्जतिल ह़राम **1429** हि. ह़वाला : **154**

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علیٰ سید المرسلین وعلی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن" के तरजमा

"आदाबे दीन"

(मत़बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

28-12-2008

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

''बा अदब बा नसीब'' के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की ''11 निय्यतें''

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ''نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ'' या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾7﴿ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾8﴿ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾9﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾10﴿ इस ह़दीसे पाक ''تَھَادَوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।'' (مؤطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۷، الحدیث: ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾11﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

الحمد للّٰہ علٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ[6] शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये

सुन्नत, माहिये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم



र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़िये !

अदब ऐसे वस्फ़ का नाम है जिस के ज़रीए इन्सान अच्छी बातों की पहचान ह़ासिल करता या अच्छे अख़्लाक़ अपनाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़ुन कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "अदब का एक मफ़्हूम येह है कि इन्सान बारगाहे ख़ुदा वन्दी में हुज़ूरी का ख़याल रखे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है : "قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا" तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ।" इस आयए मुबा-रका की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "मत़लब येह है कि अपने घर वालों को दीन और आदाब सिखाओ।"

मज़ीद फ़रमाते हैं : "ह़क़ीक़त अदब येह है कि इन्सान में अच्छी आ़दात जम्अ़ हो जाएं और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमें ज़ियादा इल्म के मुक़ाबले में थोड़े अदब की ज़ियादा ज़रूरत है।"

(الرسالة القشيرية، باب الادب، ص٣١٥تا٣١٧، دار الكتب العلمية بيروت)

शरीअ़ते मुत़ह्हरा में इसे बड़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल है। एक मुसल्मान को चाहिये कि अपने अख़्लाक़ संवारने की कोशिश करे। पस वोह एक ऐसे उ़म्दा व बेहतरीन नमूने का मोह़ताज है जिस के सांचे में ज़िन्दगी ढाल कर अपने अख़्लाक़ व आदाब को शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बना सके। इस के लिये सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी क़ाबिले तक़्लीद नमूना है और क्यूं न हो कि ख़ुद रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

ज़िन्दगी को बेहतरीन नमूना क़रार दिया । चुनान्चे, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कु़रआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इर्शाद फ़रमाया :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱،الاحزاب:۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है ।

अल्लाह के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खु़द अदब के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे मेरे रब ने अच्छा अदब सिखाया ।'' (الجامع الصغیرللسیوطی، باب الهمزه،الحدیث ۳۱۰،ص۲۵)

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **''फ़ैज़ुल क़दीर''** में इस की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''मुझे मेरे रब ने रियाज़ते नफ़्स और ज़ाहिरी व बात़िनी अख़्लाक़ की ता'लीम फ़रमाई इस त़रह़ कि मुझ पर ऐसे उ़लूमे कस्बिया व वह्बिया(1) के ज़रीए लुत़्फ़ो करम फ़रमाया जिन की मिस्ल किसी इन्सान को अ़त़ा नहीं किये गए ।''

(فیض القدیر،حرف الهمزه،تحت الحدیث ۳۱۰،ج۱،ص۲۹۰)

रसूले करीम, साह़िबे खु़ल्के़ अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

तेरे खु़ल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़िल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा तेरे ख़ालिके़ हुस्नो अदा की क़सम

1 : **उ़लूमे वह्बिया** वोह हैं कि जो मह्ज़ अ़त़ाए इलाही से ह़ासिल हों । और **उ़लूमे कस्बिया** वोह हैं कि जिस में बन्दे की कोशिश भी शामिल हो ।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें अदब सीखने और सिखाने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्चे, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "अपनी औलाद को तीन (अच्छी) ख़स्लतों की ता'लीम दो (1) अपने नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत (2) अहले बैत की मह़ब्बत और (3) कुरआने पाक की ता'लीम। बेशक ह़ामिलीने कुरआन (या'नी कुरआन पढ़ने वाले) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबियों और पसन्दीदा लोगों के साथ उस के (अ़र्श के) साए में होंगे कि जिस दिन उस के साए के इ़लावा कोई साया न होगा।" (الجامع الصغیرللسیوطی، باب الھمزہ،الحدیث ۳۱۱،ص۲۵)

मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : **"وَلَادِيْنَ لِمَنْ لَّااَدَبَ لَهٗ"** : या'नी : जो बा अदब नहीं उस का कोई दीन नहीं।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 28, स. 158, मत़्बूआ़ रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

ज़ेरे नज़र रिसाला **"اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن"** अबू ह़ामिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की मुन्फ़रिद तस्नीफ़ है जिस में कुरआनो ह़दीस से माख़ूज़ ऐसे आदाब बयान किये गए हैं जिन पर अ़मल कर के हम अपनी ज़िन्दगी संवार सकते हैं। म-सलन बारगाहे ख़ुदा वन्दी के आदाब, मस्जिद के आदाब, बैतुल्लाह शरीफ़ के आदाब, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के आदाब, खाने पीने के आदाब, नमाज़ के आदाब वग़ैरा।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए तराजिमे कुतुब के म-दनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की अनथक काविशों से इस रिसाले का उर्दू तरजमा " **आदाबे दीन**" के नाम से शाएअ़ हो कर

आप के हाथों में है। इस में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ताओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़्ल है।

तरजमा के लिये दारुल फ़िक्र बैरूत का नुस्ख़ा इस्ति'माल किया गया है और **तरजमा करते हुए दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :**

★...... सलीस और बा मुह़ा-वरा तरजमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

★...... बा'ज़ मक़ामात पर ह़वाशी मअ़ तख़्रीज का इल्तिज़ाम किया गया है।

★...... मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (......) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

★...... अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

(اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم)

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब :

आप की कुन्यत अबू ह़ामिद, लक़ब हुज्जतुल इस्लाम और नामे नामी, इस्मे गिरामी मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद तूसी ग़ज़ाली رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی है।

विलादते बा सआ़दत :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه 450 हि. खुरासान के शहर तूस में पैदा हुए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे गिरामी इसी शहर में ऊन कात कर बेचा करते थे।

इ़ल्मी ज़िन्दगी :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने इब्तिदाई ता'लीम अपने शहर में ह़ासिल की और फ़िक़्ह की किताबें ह़ज़रते अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पढ़ीं। फिर 20 बरस से कम उ़म्र में इमाम अबू नस्र इस्माईली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में जुरजान ह़ाज़िर हुए। इस के बा'द 473 हि. नैशापूर में इमामुल ह़-रमैन इमाम जुवैनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ज़ानूए तलम्मुज़ (ता'लीम के मराह़िल) त़ै किया और उन से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुना-ज़रा, मन्तिक़, ह़िक्मत और फ़ल्सफ़ा वग़ैरा में महारते ताम्मह ह़ासिल की। (एक मौक़अ़ पर इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ग़ज़ाली, इ़ल्म के बह़रे ज़ख़्ख़ार (या'नी हर वक़्त इ़ल्म के मोती लुटाने वाले) हैं।")

मशाइख़ व असातिज़ए किराम और तलामिज़ा :

चन्द मश्हूर मशाइख़ व असातिज़ा के नाम येह हैं : अ़ल्लामा

अह़मद बिन मुह़म्मद राज़्कानी, इमाम अबू नस्र इस्माईली, इमामुल ह़-रमैन अबुल मआ़ली इमाम जुवैनी, ह़ाफ़िज़ उ़मर बिन अबिल ह़सन रुआसी, अबू अ़ली फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद बिन अ़ली फ़ारमदी तूसी, यूसुफ़ सज्जाज, अबू सह्ल मुह़म्मद बिन अह़मद उ़बैदुल्लाह ह़फ़्सी मरूज़ी, ह़ाकिम अबुल फ़त्ह़ नस्र बिन अ़ली बिन अह़मद ह़ाकिमी तूसी, अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अह़मद ख़्वारी, मुह़म्मद बिन यह़्या, इब्ने मुह़म्मद सजाई ज़ौज़िनी, ह़ाफ़िज़ अबुल फ़ितयान उ़मर बिन अबिल ह़सन रुआसी दहिस्तानी, नस्र बिन इब्राहीम मक़्दसी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن वग़ैरा शामिल हैं । और आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه के बा'ज़ मुम्ताज़ तलामिज़ा (या'नी शागिर्दाने रशीद) येह हैं : मुह़म्मद बिन तौमरत, अ़ल्लामा अबू बक्र अ़-रबी, क़ाज़ी अबू नस्र अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह, इमाम अबू सईद यह़्या, अबू त़ाहिर, इमाम इब्राहीम, अबू त़ालिब अ़ब्दुल करीम राज़ी, जमालुल इस्लाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुस्लिम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن ।

मद्रसए निज़ामिया में तदरीस :

वज़ीर निज़ामुल मुल्क ने बग़दाद में **मद्रसए निज़ामिया** की बुन्याद रखी और आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه **484** हि. में वहां उस्ताज़ मुक़र्रर हुए, फिर चार साल बग़दाद में तदरीस व तस्नीफ़ में मश्ग़ूल रहे । फिर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने तदरीस के लिये अपने भाई को अपना क़ाइम मक़ाम बनाया और ख़ुद ह़ज के इरादे से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रवाना हो गए ।

दुन्या से बे रग़बती :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی का दिल दुन्या से उचाट हो गया और मुकम्मल त़ौर पर फ़िक्रे आख़िरत

में मुन्हमिक हो गए और 489 हि. में दिमश्क़ पहुंचे और कुछ दिन वहां क़ियाम फ़रमाया। फिर मुख़्तलिफ़ मक़ामात से होते हुए बिल आख़िर तूस वापस तशरीफ़ लाए और अपने घर को लाज़िम पकड़ लिया और ता दमे आख़िर वा'ज़ो नसीहत, इबादत और तदरीस में मश्ग़ूल रहे।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तसानीफ़ :

कई उ़लूमो फुनून में सेंकड़ों कुतुब तस्नीफ़ कीं, जिन में से चन्द के नाम येह हैं :

(١)تعليقه فى فروع المذهب (٢)بيان القولين (٣)الوجيزفى الفروع (٤)الوسيط المحيط بأقطار البسيط (٥)تحسين المأخذ (٦)مفصَّل الخلاف فى اصول القياس (٧)شفاء العليل (٨)معيار العلم (٩)ميزان العمل (١٠)تهافة الفلاسفة (١١)المنقذ من الضلال والمفصح عن الاحوال (١٢)الإقتصاد فى الاعتقاد (١٣)منهاج العابدين الى جنَّة ربِّ العالمين (١٤)كيميائے سعادت (١٥)احياء علوم الدين (١٦)اخلاق الابرار (١٧)ايُّها الولد (١٨)اربعين (١٩) قانون الرسول (٢٠)المجلس الغزالية(٢١)تنبيه الغافلين(٢٢)مكاشفة القلوب۔

विसाले पुर मलाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی तक़रीबन निस्फ़ सदी आस्माने इल्मो ह़िक्मत के उफ़ुक़ पर आफ़्ताब बन कर चमक्ते रहे। बिल आख़िर **505** हि. तूस में विसाल फ़रमा गए। ब वक़्ते विसाल आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की उ़म्र मुबारक **55** साल थी। (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم)

फ़ेहरिस्त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।"

(سنن ابن ماجة،حدیث ۴۲۵۰،ص ۲۷۳۵)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَنَا فَاَكْمَلَ خَلْقَنَا، وَاَدَّبَنَا فَاَحْسَنَ اَدَبَنَا، وَشَرَّفَنَا بِنَبِيِّهٖ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ فَاَحْسَنَ تَشْرِيْفَنَا

(**तरजमा :** तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमें कामिल सूरत में पैदा फ़रमाया, हमें अच्छा अदब सिखाया और अपने प्यारे मह़बूब, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती बनने का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया।)

दीन में सब से कामिल अख़्लाक़ और अफ़्ज़ल अफ़आ़ल इस के आदाब हैं, जिन के ज़रीए बन्दए मोमिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करता और अम्बिया व मुर–सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام के अख़्लाक़ को अपनाता है। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने ह़कीम के ज़रीए वाज़ेह़ त़ौर पर हमें अदब सिखाया और अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत के ज़रीए हमें इस की ता'लीम दी जिस की पैरवी हम पर लाज़िम है, पस उसी का एह़सान है। और इसी त़रह़ सह़ाबए किराम, ताबिईने इज़ाम और बा'द वाले अहले अदब मुअमिनीन के ज़रीए हमें अदब सिखाया उन की इत्तिबाअ़ भी हम पर लाज़िम है। और दीन के आदाब का बहुत बड़ा ह़िस्सा है और इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है जिन में से हम बा'ज़ का ज़िक्र करेंगे ताकि बह़स इतनी ज़ियादा त़वील न हो जाए कि इस का समझना ही दुश्वार हो जाए।

बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ के आदाब

(बन्दे को चाहिये कि बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में) अपनी निगाहें नीची रखे, अपने ग़मों और परेशानियों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करे, ख़ामोशी की आ़दत बनाए, आ'ज़ा को पुर सुकून रखे, जिन कामों का हुक्म दिया गया है उन की बजा आ–वरी में जल्दी करे और जिन से मन्अ़ किया गया है उन से और (उन पर) ए'तिराज़ करने से बचे, अच्छे अख़्लाक़ अपनाए, हर वक़्त ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की आ़दत बनाए, अपनी सोच को पाकीज़ा बनाए, आ'ज़ा को क़ाबू में रखे, दिल पुर सुकून हो, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की ता'ज़ीम बजा लाए, ग़ैज़ो ग़ज़ब न करे, मह़ब्बते इलाही को (लोगों) से छुपाए, इख़्लास अपनाने की कोशिश करे, लोगों (के पास मौजूद मालो दौलत) की त़रफ़ नज़र करने से बचे, सह़ीह़ व दुरुस्त बात को तरजीह़ दे, मख़्लूक़ से उम्मीद न रखे, अ़मल में इख़्लास पैदा करे, सच बोले और गुनाहों से बचे, नेकियों को ज़िन्दा करे (या'नी नेकियों पर अ़मल पैरा हो), लोगों की त़रफ़ इशारे न करे और मुफ़ीद बातें न छुपाए, नाम व नसब की तब्दीली पर ग़ैरत और ह़राम कामों के इरतिकाब पर ग़ैज़ो ग़ज़ब का इज़्हार करे, हमेशा बा वक़ार व पुर जलाल रहे, ह़या को अपना शिआ़र बना ले, ख़ौफ़ व डर की कैफ़िय्यत पैदा करे, उस शख़्स की त़रह़ मुत़्मइन हो जाए जिसे ज़मान दी गई हो, (तवक्कुल अपनाए कि) तवक्कुल अच्छे इख़्तियार की पहचान का नाम है, दुश्वारी के वक़्त कामिल वुज़ू करे, एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करे, उस का दिल फ़र्ज़ छूट जाने के ख़ौफ़ से बेचैन व मुज़्त़रिब हो जाए, गुनाहों पर डटे रहने के ख़ौफ़ से तौबा पर हमेशगी इख़्तियार करे और ग़ैब की तस्दीक़ करे, ज़िक्र करते वक़्त दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ पैदा करे, वा'ज़ो नसीह़त के वक़्त उस का नूरे बात़िनी ज़ियादा हो, फ़क़्रो फ़ाक़ा

(या'नी तंगदस्ती) के वक़्त तवक्कुल को अपना शिआ़र बनाए और जहां तक हो सके क़बूलिय्यत की उम्मीद रखते हुए स-दक़ा करे।

आ़लिमे दीन के आदाब

(आ़लिम को चाहिये कि) इ़ल्म व अ़मल को लाज़िम जाने, हमेशा बा वक़ार रहे, तकब्बुर करने से बचे और मु-तकब्बिराना अन्दाज़ में दुआ़ न करे, इ़ल्म सीखने वाले पर नरमी करे, बड़ाई जताने वाले के साथ बुर्द-बारी से पेश आए, कुन्द ज़ेह्न को मस्अला अच्छी त़रह़ समझाए, (मस्अला मा'लूम न होने की सूरत में) अस्लाफ़ के क़ौल "لَا اَدْرِی या'नी मैं नहीं जानता" से ब-र-कत ह़ासिल करे, जब कोई सुवाल करे तो उस के इख़्लास की वजह से अपनी पूरी कोशिश से उस के सुवाल के जवाब में गुफ़्त-गू का निचोड़ पेश करे और तकल्लुफ़ में न पड़े, दलील को तवज्जोह से सुने और (दुरुस्त होने की सूरत में) उसे क़बूल करे अगर्चे मद्दे मुक़ाबिल (या'नी मुख़ालिफ़) की त़रफ़ से हो।

आ़लिम के पास ह़ाज़िर होने के आदाब

(आ़लिमे दीन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने वाले को चाहिये कि उसे) सलाम करने में पहल करे, उस के सामने गुफ़्त-गू कम करे। जब वोह खड़ा हो तो उस की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाए। उस के सामने यूं न कहे : "फुलां ने तो आप के ख़िलाफ़ कहा है।" आ़लिम की मौजू-दगी में उस के हम नशीन से सुवाल न करे, न तो आ़लिम से गुफ़्त-गू करते वक़्त हंसे और न ही उस की राय के ख़िलाफ़ मश्वरा दे। जब वोह खड़ा हो तो उस के दामन को न पकड़े, रास्ते में चलते हुए उस से मसाइल न समझे। जब तक कि वोह घर न पहुंच जाए, आ़लिम की उक्ताहट के वक़्त उस के पास कम आया जाया करे।

उस्ताज़ के आदाब

(उस्ताद को चाहिये कि) दिल में ख़ौफ़ो ख़शिय्यत पैदा करे, बात को ख़ामोशी और तवज्जोह से सुने और समझे, रह़मत का मुन्तज़िर रहे, मु-तशाबह हुरूफ़, वक़्फ़ के इशारे, इब्तिदा की पहचान, हम्ज़ा का बयान, ता'दादे अस्बाक़, हुरूफ़े तज्वीद और ख़ातिमए किताब का फ़ाएदा वग़ैरा की त़रफ़ ख़ूब ध्यान दे। इब्तिदा में शागिर्द पर नरमी करे, जब त़ालिबे इ़ल्म ग़ैर ह़ाज़िर हो तो उस के बारे में मा'लूमात करे और जब ह़ाज़िर हो तो उसे ता'लीम ह़ासिल करने पर बर अंगेख़्ता करे (या'नी इस की तरग़ीब दिलाए), गपशप से इज्तिनाब करे और अपने लिये दुआ़ करने से पहले शागिर्द के लिये दुआ़ करे जब तक कि वोह किसी दूसरे उस्ताज़ के पास न चला जाए।

त़ालिबे इ़ल्म के आदाब

(शागिर्द को चाहिये कि) उस्ताज़ साह़िब के सामने दिल में आ़जिज़ी पैदा करे और पूरी तवज्जोह के साथ, सर झुका कर बैठे। पढ़ने से पहले इजाज़त त़लब करे, फिर तअ़व्वुज़ व तस्मिय्या (या'नी اَعُوْذُ بِالله और بِسْمِ الله शरीफ़) पढ़े और जब पढ़ाई से फ़ारिग़ हो तो दुआ़ करे।

बच्चों को पढ़ाने वाले के आदाब

(बच्चों को पढ़ाने वाला) पहले अपने नफ़्स की इस्लाह़ करे क्यूं कि बच्चों की नज़रें उसे देखती हैं और उन के कान उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह होते हैं। पस जो उस के नज़्दीक अच्छा होगा वोह उन के नज़्दीक भी अच्छा होगा और जो उस के नज़्दीक बुरा होगा वोह उन के नज़्दीक भी बुरा होगा, क्लास में ख़ामोशी इख़्तियार करे, आंखों में ग़ज़ब व जलाल को लाज़िम पकड़े,

अपने रो'ब व हैबत के ज़रीए बच्चों को अदब सिखाए, मारने और ईज़ा रसानी में ज़ियादती न करे, उन से ज़ियादा हंसी मस्ख़री भी न करे कि वोह उस्ताज़ पर जुरअत करने लगें, न उन्हें आपस में ज़ियादा गुफ़्त-गू करने दे कहीं ऐसा न हो कि वोह उस के सामने बे तकल्लुफ़ हो जाएं, और न ही बच्चों के सामने किसी से हंसी मज़ाक़ करे, बच्चे उसे कुछ दें तो उस से बचने की कोशिश करे, अपने सामने मौजूद मुश्तबह चीज़ों से एह्तिराज़ करे कहीं ऐसा न हो कि बच्चे उस से दूर हो जाएं, उन्हें लड़ाई झगड़े से मन्अ़ करे और दूसरों की तफ़्तीश (या'नी उन की टोह में पड़ने) से रोके, उन के सामने ग़ीबत, झूट और चुग़ली की मज़म्मत और बुराई बयान करे, बच्चों से ऐसे काम की बार बार पूछगछ न करे जिस के वोह आ़दी हों कि कहीं वोह उस को बोझ तसव्वुर न करने लग जाएं, उन के वालिदैन से न मांगता फिरे ऐसा न हो कि वोह उस से उक्ता जाएं, उन्हें नमाज़ व त़हारत (या'नी पाकी ह़ासिल करने) के मसाइल सिखाए और उन चीज़ों की पहचान करवाए जिन से उन्हें नजासत लाहि़क़ होती (या'नी पलीदी पहुंचती) है।

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

मुहद्दिस[1] के आदाब

(ह़दीस बयान करने वाले को चाहिये कि) हमेशा सच बोले, झूट से बचे, मश्हूर अह़ादीस[2] सिक़ह[3] रावियों से रिवायत करे, मुन्कर अह़ादीस[4] बयान न करे और (अह़ादीस के मु–तअ़ल्लिक़) सलफ़ सालिह़ीन का इख़्तिलाफ़ ज़िक्र न करे, ज़माने की पहचान रखता हो, तह़रीफ़ (अल्फ़ाज़े ह़दीस में रद्दो बदल या तब्दीली करने), ए'राबी ग़–लती, हुरूफ़ में इश्तिबाह की वजह से ग़लत़ लिखने, पढ़ने और लग़्ज़िश वग़ैरा से बचे। हंसी मज़ाक़ और फ़ितना व फ़साद बरपा न करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस ने'मत पर शुक्र अदा करे कि उसे रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीस बयान करने का मन्सब अ़त़ा फ़रमाया गया और आ़जिज़ी व इन्किसारी अपनाए। अक्सर वोह अह़ादीस बयान करे जिन के ज़रीए मुसल्मानों को फ़राइज़, सुन्नतें, आदाब और क़ुरआने पाक

1...... **मुहद्दिस :** जो अह़ादीसे न–बवी में मस्रूफ़ व मश्ग़ूल हो उसे मुहद्दिस कहा जाता है। (شرح النخبة:نزهة النظرفی توضیح نخبة الفکر،ص٤١،مطبوعه مکتبة المدينة)

2...... **ह़दीसे मश्हूर :** वोह है जिस के रावी हर त़ब्क़े में दो से ज़ाइद मगर तवातुर की ता'दाद से कम हों। (المرجع السابق،ص٤٦)

3...... **सिक़ह रावी :** वोह है जो अपनी रिवायत में आ़दिल व ज़ाबित़ हो (इस की मज़ीद वज़ाह़त अल फ़िय्यतिस्सुयूत़ी में है)।

(الفية السيوطى، من تقبل روايته ومن ترد، ص٨٥، مطبوعه المكتبة التجارية مكة المكرمة)

4...... **मुन्कर ह़दीस :** "अगर ज़ईफ़ रावी का बयान सिक़ह रावी के ख़िलाफ़ है तो ज़ईफ़ रावी के बयान को "**मुन्कर**" और सिक़ह के बयान को "मा'रूफ़" कहेंगे। **मुन्कर की एक ता'रीफ़ येह है :** "वोह ह़दीस जो किसी ऐसे रावी से मरवी हो जो फ़ोह़्शे ग़लत़ या कस्रते ग़फ़्लत या फ़िस्क़ के साथ मत़ऊन हो (ख़्वाह उस की रिवायत सिक़ह की रिवायत के ख़िलाफ़ हो या न हो)।"

(شرح النخبة:نزهة النظرفی توضیح نخبة الفکر،ص٧٢،مطبوعه مکتبة المدينة)

के मआ़नी व मत़ालिब समझने में आसानी हो। इ़ल्म को वु-ज़रा के पास लिये लिये न फिरे और उ-मरा (अमीर लोगों) के दरवाज़ों के चक्कर न लगाता फिरे कि येह चीज़ें उ़-लमा की रुस्वाई का बाइ़स बनती हैं। जब वोह अपने इ़ल्म को सरमाया दारों और बादशाहों के पास लिये लिये फिरते हैं तो उन के इ़ल्म की रोनक़ ख़त्म हो जाती है। जिस ह़दीस की अस्ल सनद न जानता हो उसे बयान न करे, मुह़द्दिस के सामने वोह ह़दीस बयान न की जाए जिस के मु-तअ़ल्लिक़ उस ने अपनी किताब में कहा हो कि "मैं इस के बारे में नहीं जानता।" जब उस के सामने ह़दीस पढ़ी जाए तो गुफ़्त-गू न करे और ह़दीसों को आपस में मिलाने से बचे।

त़ालिबे ह़दीस के आदाब

(ह़दीस का इ़ल्म ह़ासिल करने वाले को चाहिये कि) मश्हूर अह़ादीस तह़रीर करे, ग़रीब(1) व मुन्कर रिवायात को न लिखे और सिक़ह रावियों की रिवायात लिखे, शोहरते ह़दीस उसे अपने दोस्त व हम नशीन पर ग़ालिब न कर दे (या'नी ऐसा न हो कि इ़ल्मे ह़दीस में महारत ह़ासिल कर के अपने रफ़ीक़ व हम नशीन को कमतर समझने लगे), त़-लबे ह़दीस में मश्ग़ूलिय्यत उसे नमाज़ पढ़ने और अख़्लाक़ व आदाब का लिह़ाज़ रखने से ग़ाफ़िल न करे, ग़ीबत से बचता रहे, ख़ामोशी इख़्तियार करते हुए तवज्जोह से सुने, मुह़द्दिस के सामने ख़ामोश रहने की आ़दत बनाए, अपने पास मौजूद नुस्ख़े की दुरुस्ती के

1...... **ग़रीब ह़दीस :** वोह है जिस की सिर्फ़ एक सनद हो या'नी जिस का रावी सिर्फ़ एक हो ख़्वाह हर त़ब्क़े में एक ही हो या किसी त़ब्क़े में ज़ाइद भी हो गए हों। (شرح النخبة:نزهة النظرفی توضیح نخبة الفکر،ص ٥٠،مطبوعه مکتبة المدینة)

लिये मुहद्दिस की तरफ़ कसरत से इल्तिफ़ात करे, और हदीस बयान करते हुए "سَمِعْتُ या'नी मैं ने सुना" न कहे जब कि इस ने वोह हदीस न सुनी हो, बुलन्दी व बड़ाई चाहने के लिये हदीस को न फैलाए कि ग़ैरे सिक़ह रावियों की रिवायात नक़्ल कर दे, अहले इस्लाम में से हदीस की मा'रिफ़त रखने वालों की सोहबत इख़्तियार करे और जिन नेक लोगों को हदीस की मा'रिफ़त हासिल नहीं उन से रिवायत न करे।

कातिब के आदाब

(लिखने वाले को चाहिये कि) अच्छे रस्मुल ख़त में किताबत करे, क़लम की नोक की उम्दगी और लफ़्ज़ों के ए'राब का ख़ास ख़याल रखे, आ'दाद व शुमार की मा'रिफ़त हासिल करे, दुरुस्त राय रखने वाला हो, अच्छे लिबास और ख़ुश्बू वग़ैरा का ख़ास एहतिमाम करे, अपनी ज़िम्मादारी ब हुस्नो ख़ूबी निभाने के लिये गुज़श्ता साहिबे इख़्तियार वु-ज़रा और ओहदे दारान के हालात जानने की कोशिश करे, क़ाबिले गिरिफ़्त बातें लिखने से बचे, ज़मीनी पैदावार के मुआ-मलात का इल्म रखे, झगड़ा करने वाले से दर गुज़र करते हुए हक़ीक़ते हाल जानने की कोशिश करे, बे हयाई और ना जाइज़ व मम्नूअ़ कामों से बचे, हमेशा बा मुरुव्वत रहे, अच्छी सोहबत इख़्तियार करे और ज़लील व हक़ीर लोगों की सोहबत से बचे, महफ़िलों और निशस्त गाहों में फ़ोहूश गोई और बद कलामी न करे, मुसाहिबीन व मु-तअ़ल्लिक़ीन के साथ (बेहूदा) गुफ़्त-गू, हंसी मज़ाक़ और बहसो मुबा-हसा न करे।

वा'ज़ो नसीहत करने वाले के आदाब

(वा'ज़ो नसीहत करने वाले को चाहिये कि) तकब्बुर से बचते हुए हमेशा अपने मालिके ह़क़ीक़ी से ह़या करता रहे, अपनी ह़ाजत बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में पेश करे। इस बात का ख़्वाहिश मन्द हो कि सुनने वाले वा'ज़ो नसीहत से फ़ाएदा ह़ासिल करें, अपनी ख़ामियों पर आगाह हो तो अपने नफ़्स को मलामत करे, सुनने वालों को सलामती चाहने वाली निगाह से देखे, उन की पोशीदा बातों के मु-तअ़ल्लिक़ हुस्ने ज़न रखे, अपनी ज़ात को त़ा'न व तश्नीअ़ से मह़फ़ूज़ रखने के लिये लोगों से कोई चीज़ त़लब न करे, अदब सिखाते हुए नरमी से काम ले, इब्तिदाअन जिसे वा'ज़ो नसीहत करे उस पर नरमी करे, जो कहे उस पर अ़मल करने का पुख़्ता इरादा करे ताकि लोग उस की बातों से फ़ाएदा ह़ासिल करें।

वा'ज़ो नसीहत सुनने वाले के आदाब

हमेशा ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी) की कैफ़िय्यत पैदा करने की कोशिश करे, जो कुछ सुने उसे याद रखने की कोशिश करे, वा'ज़ो नसीहत करने वाले के मु-तअ़ल्लिक़ हुस्ने ज़न रखे, वाइज़ की बात के दुरुस्त होने का ए'तिक़ाद रखे, हमेशा ख़ामोश रहने की आ़दत अपनाए, मुस्तक़िल मिज़ाजी इख़्तियार करे, अपने ग़मों और फ़िक्रों को मुज्तमअ़ कर ले (या'नी दुन्यवी ख़यालात में मश्ग़ूल न रहे और लोगों पर) तोहमत लगाने से बचे।

आ़बिदो ज़ाहिद के आदाब

(इ़बादत करने वाले को चाहिये कि) इ़बादत के अवक़ात की मा'लूमात रखे, उस का मक़्सूद इ़बादत हो, पुर दलील कलाम करे, (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से हर वक़्त) आंखों से आंसू बहते रहें, ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ की कैफ़िय्यत पैदा करे, निगाहें झुकाए रखे, नफ़्सानी ख़्वाहिशात की मुख़ा-लफ़त करे, वक़्त ज़ाएअ़ करने से बचे, दीनी मुआ़-मलात के मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्र मन्द रहे, अपने वक़्त की ह़िफ़ाज़त व निगरानी करे, रोज़ों पर हमेशगी इख़्तियार करे, रात की तन्हाई में इ़बादत की आ़दत बनाए, अपने घर में भी परहेज़ गारी इख़्तियार करे, खाने पीने के मुआ़-मले में क़नाअ़त पसन्द बने, हर वक़्त मौत का मुन्तज़िर रहे, अपने मुसाह़िबों और हम नशीनों से कनारा कश रहे, नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क कर दे, नमाज़ों की पाबन्दी करे, अपनी ह़ालत की बेहतरी और कमज़ोरी को जानने की कोशिश करे, अपनी मौजूदा इ़ल्मी ह़ालत के ए'तिबार से दूसरे के इ़ल्म का मोह़ताज न हो (क्यूं कि हर शख़्स पर उस की ह़ालते मौजूदा के मसाइल सीखना फ़र्ज़ है)।

गोशा नशीनी के आदाब

गोशा नशीनी इख़्तियार करने वाला दीन की समझ बूझ रखता हो, नमाज़ रोज़े और ह़ज ज़कात के अह़काम जानता हो, लोगों से कनारा कशी इख़्तियार करने में उन से अपना शर दूर करने का न-ज़रिय्या रखे, नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी करे और नमाज़े जुमुआ़ में ह़ाज़िर हो, नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत और मरीज़ों की इ़यादत करता रहे, लोगों की गुफ़्त-गू में दिल चस्पी न ले और उन के मुआ़-मलात के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल न करे जो उस के दिल में फ़साद व बिगाड़ का सबब बनें, उस का नफ़्स लोगों से अ़तिय्यात

व बख़्शिश वग़ैरा के हुसूल की लालच न करे यहां तक कि अपने पड़ोसियों का भी किसी मुआ-मले में मोह़ताज न हो। अपने अवक़ात को इस त़रह़ तक़्सीम करे कि या तो नमाज़ पढ़े और सीखने सिखाने का सिल्सिला जारी रखे ताकि फ़ाएदा पाए या अपने पास मौजूद कुतुब में ग़ौरो फ़िक्र कर के इ़ल्म ह़ासिल करे या आराम करे ताकि आफ़ात (या'नी गुनाहों) वग़ैरा से मह़फ़ूज़ रहे। ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की आ़दत डाले, कसरत से ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाता रहे यहां तक कि अपने मक़्सद में काम्याब हो जाए और अगर उस के बीवी बच्चे हों तो उन के साथ गुफ़्त-गू करे और तन्हाई में कोशिश करता रहे यहां तक कि गोशा नशीनी के द-रजे को पहचान ले।

परहेज़ गार के आदाब

(परहेज़ गार बन्दे को चाहिये कि) लोगों की त़रफ़ इशारे न करे, ख़िलाफ़े शर-अ़ बात न करे, इ़ल्मे शरीअ़त को मज़्बूती से थामे रखे, सख़्त मेह़नत और जां फ़िशानी से अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी करे, लोगों से दूर भागे, लिबासे शोहरत (या'नी नुमूदो नुमाइश वाला लिबास) न पहने, ख़ुश अख़्लाक़ी का मुज़ा-हरा करे, तवक्कुल को अपना शिआ़र बनाए, फ़क़्र इख़्तियार करे, हर वक़्त ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत को लोगों से छुपाए, दोस्तों के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आए, अपनी निगाहों को अम्रदों के देखने से बचाए, औ़रतों के साथ मेलजोल न रखे, हमेशा दर्से क़ुरआन देता रहे (या'नी क़ुरआने करीम के ज़रीए़ लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करता रहे)।

मुहज़्ज़ब शख़्स के आदाब

(एक मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स पर लाज़िम है कि) अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू की ह़िफ़ाज़त करे (या'नी इसे दाग़दार होने से बचाए), अपने नसब (ख़ानदानी सिल्सिले) की वजह से लोगों का माल न खाए और अपने ह़सब (ख़ानदानी शराफ़त) की वजह से उन पर ज़ुल्म न करे, उस का मक़्सदे ह़यात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करना और उस से डरते रहना हो, किसी शख़्स पर अपनी फ़ज़ीलत व बरतरी न जताए, अपने हमसर की बराबरी न करे, अहले इ़ल्म की फ़ज़ीलत का ए'तिराफ़ करे अगर्चे इ़ल्म में उन के बराबर हो या उन से ज़ियादा इ़ल्म रखता हो, हमेशा फ़िक़्ही मसाइल और क़ुरआने करीम ज़ियादा जानने वालों की सोह़बत इख़्तियार करे, अपने अख़्लाक़ संवारने की कोशिश करे, ह़ालते ग़ज़ब में और गुफ़्त-गू के दौरान मोह़तात़ अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करे, हम नशीनों की ता'ज़ीमो तौक़ीर करे, भाइयों के साथ मेलजोल (या'नी तअ़ल्लुक़) क़ाइम करे, अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की इ़ज़्ज़त व आबरू की ह़िफ़ाज़त और पड़ोसियों की मदद करे, अपने लिये अच्छे दोस्तों का इन्तिख़ाब करे ।

नींद के आदाब

(सोने वाले को चाहिये कि) सोने से पहले वुज़ू करे और दाईं करवट पर सोए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहे[1] यहां तक कि उसे नींद आ जाए। जब सो कर उठे तो बेदार होने की दुआ़ पढ़े[2] और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाए।

1...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर फ़रमाते...... बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर

नमाज़े तहज्जुद के आदाब

(तहज्जुद गुज़ार को चाहिये कि) खाने पीने के मुआ़-मले में ब क़द्रे किफ़ायत खाए, दिन के अवक़ात को झूट, ग़ीबत और लग्वियात से पाक रखने की कोशिश करे, ह़राम व ना जाइज़ की त़रफ़ देखने से बचे, अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का ख़ौफ़ रखते हुए रात में इ़बादत करने की आ़दत बनाए, कामिल वुज़ू करे और आस्मानों की वसीअ़ काएनात में ग़ौरो फ़िक्र करे, दुआ़ करे और हुज़ूरे क़ल्बी के साथ नमाज़ पढ़े ताकि जो कुछ तिलावत कर रहा है उस का मत़लब भी समझे ।

बैतुल ख़ला के आदाब

(बैतुल ख़ला में जाने वाला) दाख़िल होने से पहले "بِسْمِ الله" शरीफ़ पढ़ कर दाख़िले की दुआ़[1] पढ़े । जब बैठते हुए ज़मीन के क़रीब हो जाए तो आहिस्तगी से सित्र खोले, इस्तिन्जा से फ़रागत के बा'द हाथों को धोते हुए मिट्टी से उन को साफ़ कर ले, बाहर निकलने से पहले अपने सित्र को छुपा ले, निकलने

बक़िय्या ह़ाशिय्या.... हुए सुना : "जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द "आ-यतुल कुरसी" पढ़े उसे जन्नत में दाख़िल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकती, और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे, उस के घर और आस पास के घरों को मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा ।" (شعب الایمان، الحدیث ۲۳۹۵، ج۲، ص۴۵۷)

2...... सो कर उठने की दुआ़ येह है : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَا تَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْر." (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, मत़बूआ़ मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

1...... बैतुल ख़ला में दाख़िल होने की दुआ़ येह है :

"اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِث."

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء عندالخلاء، الحدیث ۶۳۲۲، ص۵۳۲)

के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द व शुक्र बजा लाए ।[1]

ग़ुस्ल ख़ाने के आदाब

(ग़ुस्ल करने वाले को चाहिये कि) सित्रे औ़रत (या'नी नाफ़ से ले कर घुटनों तक के ह़िस्से) को छुपाए, लोगों के सित्र को देखने से बचे, ग़ुस्ल करने के लिये तन्हाई इख़्तियार करे, ग़ुस्ल ख़ाने में जा कर न तो बातें करे, न इधर उधर तवज्जोह करे, न सलाम करे और न ही सलाम का जवाब दे, ग़ुस्ल ख़ाने में ज़ियादा देर न ठहरे (या'नी फ़ारिग़ हो कर फ़ौरन बाहर आ जाए), अगर जिस्म नापाक हो तो दाख़िल होने से पहले उसे धो ले, ग़ुस्ल से फ़राग़त के बा'द जब ग़ुस्ल ख़ाने से निकले तो दोनों पाउं ठन्डे पानी से धो ले कि इस से दर्दे सर दूर होगा । (इस में बा'ज़ आदाब पहले ज़माने के ह़म्मामों से मु-तअ़ल्लिक़ हैं कि उस वक़्त बड़े बड़े ह़म्मामों में बा पर्दा हो कर कई कई अफ़राद एक साथ ग़ुस्ल किया करते थे ।)

त़हारत व पाकीज़गी और सफ़ाई के आदाब

(त़हारत ह़ासिल करने वाले को चाहिये कि वुज़ू से पहले) मिस्वाक करे और हर उ़ज़्व धोते वक़्त ज़बान को ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ से तर रखे, जिस ज़ात की इबादत करने का इरादा रखता है दिल में उस का ख़ौफ़ पैदा करते हुए (अपने गुनाहों से) तौबा करे, वुज़ू के बा'द नमाज़ शुरूअ़ करने तक ख़ामोशी इख़्तियार करे, (बात़िनी) त़हारत के बा'द (ज़ाहिरी) पाकीज़गी ह़ासिल करे, मूंछों को पस्त करे, बग़लों के बाल उखेड़े, मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडे, नाख़ुन

1...... बैतुल ख़ला से निकलने की दुआ़ येह है :

''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ.''

(سنن ابن ماجة،ابواب الطهارة،باب مايقول اذاخرج من الخلاء،الحديث ٣٠١،ص٢٤٩٥)

काटे, ख़तना करे[1], (हाथ पाउं की) उंग्लियों के जोड़ अच्छी त़रह़ धो ले, नाक की सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखे, कपड़ों और बदन की पाकीज़गी का ख़ूब एहतिमाम करे।

मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब

(मस्जिद में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि) पहले दायां पाउं दाख़िल करे, जूतों पर गन्दगी वग़ैरा लगी हुई हो तो उसे झाड़ ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे (या'नी मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़[2] पढ़े), अगर मस्जिद में कोई मौजूद हो तो उसे सलाम करे, कोई न हो तो अपने आप पर सलाम भेजे[3], **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करे कि वोह इस के लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल

1...... बालिग़ के ख़तना के मु-तअ़ल्लिक़ किये गए सुवाल के जवाब में आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "हां ! अगर ख़ुद कर सकता हो तो आप अपने हाथ से कर ले या कोई औ़रत जो इस काम को कर सकती हो, मुम्किन हो तो उस से निकाह़ करा दिया जाए वोह ख़तना कर दे, इस के बा'द चाहे तो उसे छोड़ दे या कोई कनीज़े शर-ई वाक़िफ़ (या'नी इस काम को कर सकती) हो तो वोह ख़रीदी जाए। और अगर येह तीनों सूरतें न हो सकें तो ह़ज्जाम ख़तना कर दे कि ऐसी ज़रूरत के लिये सित्र देखना दिखाना मन्अ़ नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 22, स. 593, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

2...... मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़ येह है : "**اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ**."

(صحیح المسلم، کتاب صلوۃ المسافرین......الخ،باب مایقول اذا دخل المسجد،الحدیث۱۶۵۲، ص۷۹۰)

3...... सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती **मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब मस्जिद में दाख़िल हो तो सलाम करे ब शर्ते कि जो लोग वहां मौजूद हैं, ज़िक्रो दर्स में मश्ग़ूल न हों और अगर वहां कोई न हो या जो लोग हैं वोह मश्ग़ूल हैं तो यूं कहे : "**اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا مِنْ رَّبِّنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللہِ الصّٰلِحِیْن**."

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 141, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

दे, क़िब्ला रू हो कर बैठे, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पैदा करे, गुफ़्त-गू कम करे, (मस्जिद में) ला'न ता'न करने से बचे, न तो मस्जिद में आवाज़ बुलन्द करे, न तलवार सौंते, न तीर अन्दाज़ी करे, न (दुन्यवी) काम करे, न गुमशुदा चीज़ तलाश करे, न ख़रीदो फ़रोख़्त करे और न ही हम-बिस्तरी करे। जब मस्जिद से निकले तो पहले बायां (या'नी उलटा) पाउं बाहर निकाले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस फ़ज़्ल का सुवाल करे जो वोह अ़ता फ़रमाता है (या'नी मस्जिद से निकलने की दुआ़[1] पढ़े)।

ए'तिकाफ़ के आदाब

(ए'तिकाफ़ करने वाले को चाहिये कि) हमेशा ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे, अपने ग़मों और फ़िक्रों को मुज्तमअ़ कर ले (या'नी दुन्यवी ख़यालात में मश्ग़ूल न हो) फ़ुज़ूल गोई न करे, (ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल करने के लिये) एक जगह मख़्सूस कर ले और इधर उधर नक़्लो ह़-र-कत न करे, नफ़्स को उस की ख़्वाहिशात और पसन्दीदा चीज़ों से रोक कर उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व इबादत पर मजबूर करे।

अज़ान के आदाब

अज़ान देने वाला मौसिमे सरमा व गरमा में अवक़ाते अज़ान की पहचान रखता हो, मनारे पर चढ़ते वक़्त निगाहें झुकाए रखे, दौराने अज़ान ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ'' और ''حَیَّ عَلَی الْفَلَاح'' कहते हुए दाएं बाएं चेहरा घुमाए, अज़ान ठहर ठहर कर और इक़ामत जल्दी जल्दी कहे।

1...... मस्जिद से निकलने की दुआ़ येह है : ''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ.''

(صحیح المسلم، کتاب صلوۃ المسافرین......الخ، باب مایقول اذا دخل المسجد، الحدیث ۱٦٥۲، ص ۷۹۰)

इमामत के आदाब

इमामत का ज़ियादा ह़क़्दार वोह है जो नमाज़ के फ़राइज़, सुन्नतें और दीगर मसाइल ज़ियादा जानता हो, उन चीज़ों की मा'लूमात रखता हो जो उसे नमाज़ में पेश आती हैं और जिन से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। ऐसे लोगों का इमाम न बने जो उसे ना पसन्द करते हों। अपने क़रीब अहले इ़ल्म को खड़ा करे और उन्हें हुक्म दे कि वोह लोगों की सफ़ें दुरुस्त करें, लोगों के साथ नरमी से पेश आए, न लम्बी लम्बी सूरतें पढ़े, न रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ात में इतनी ज़ियादती करे कि लोग कबीदा ख़ातिर हो जाएं (या'नी उक्ता जाएं), और न ही इतनी तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) करे कि नमाज़ कामिल ही न हो, बल्कि लोगों में कमज़ोर व ज़ईफ़ शख़्स की क़ुदरत व त़ाक़त का ख़याल रखते हुए नमाज़ पढ़ाए, रुकूअ़ व सुजूद में नरमी करे (या'नी कुछ देर ठहरा रहे) ताकि लोगों को इत़्मीनान हो जाए, सूरए फ़ातिह़ा पढ़ने से पहले और बा'द और क़िराअत से फ़ारिग़ होने के बा'द मा'मूली सा वक़्फ़ा करे[1] इमाम रुकूअ़ में हो और अपने पीछे किसी ऐसे शख़्स को आता हुवा मह़सूस करे जिसे जानता न हो तो रुकूअ़ में उस का इन्तिज़ार करे ताकि वोह नमाज़ में शामिल हो सके, नमाज़ से पहले अपने पड़ोसियों में से किसी को न पाए तो जब तक नमाज़ का वक़्त निकलने का ख़ौफ़ न हो उस का इन्तिज़ार करे, दोनों सलामों के माबैन थोड़ा सा वक़्फ़ा करते हुए फ़र्क़ करे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पर्दा पोशी फ़रमाने और उस के एह़सान पर नज़र रखे और ब कसरत अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता रहे, और हर ह़ाल में हमेशा उस का ज़िक्र करता रहे।

1...... याद रहे कि वक़्फ़ा इतना त़वील न हो कि तीन बार "سُبْحٰنَ الله" कहने की मिक़्दार गुज़र जाए वरना तर्के वाजिब के सबब सज्दए सह्व लाज़िम होगा। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 519, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

नमाज़ के आदाब

(नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिये कि) आ़जिज़ी व इन्किसारी और खुशूओ़ खुज़ूअ़ की कैफ़िय्यत पैदा करे और हुज़ूरे क़ल्बी के साथ नमाज़ पढ़े, वस्वसों से बचने की कोशिश करे, ज़ाहिरी व बात़िनी त़ौर पर तवज्जोह से नमाज़ पढ़े, आ'ज़ा पुर सुकून रखे, निगाहें नीची रखे, (क़ियाम में) दायां हाथ बाएं हाथ पर रखे, तिलावत में ग़ौरो फ़िक्र करे, डरते हुए और ख़ौफ़ज़दा हो कर तक्बीर कहे, खुशूओ़ खुज़ूअ़ के साथ रुकूअ़ व सुजूद करे, ता'ज़ीमो तौक़ीर के साथ तस्बीह़ पढ़े, और तशह्हुद इस त़रह़ पढ़े गोया **अल्लाह** तआ़ला को देख रहा है, (रह़मते खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ की) उम्मीद रखते हुए सलाम फैरे, इस ख़ौफ़ से पलटे कि न जाने मेरी नमाज़ क़बूल भी हुई है या नहीं, और रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ त़लब करने की कोशिश करे।

तिलावते क़ुरआन के आदाब

(तिलावत करने वाले को चाहिये कि) हमेशा बा वक़ार व बा ह़या रहे, फ़ुज़ूलियात व लग़्वियात और फ़ोह़्श गोई व बद कलामी से इज्तिनाब करे और आ़जिज़ी व इन्किसारी और आहो ज़ारी की आ़दत अपनाए।

दुआ़ के आदाब

(दुआ़ करने वाले को चाहिये कि) दिल जम्ई के साथ दुआ़ करे, तमाम ग़मों और फ़िक्रों को मुज्तमअ़ कर ले (या'नी अपनी ह़ाजत बारगाहे इलाही में पेश करे), कमज़ोरी व ज़िल्लत का इज़्हार करे, (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर) अच्छी उम्मीद रखे, आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ दुआ़ करे, ग़ुरबत व मोह़ताजी दूर करने का सुवाल करे, डूबने वाले की सी कैफ़िय्यत त़ारी करे, ब क़द्रे इस्तित़ाअ़त ज़ाते

बारी तआ़ला की मा'रिफ़त ह़ासिल करे, दुआ़ करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम इ़ज़्ज़त व हु़रमत को पेशे नज़र रखे, उस की बारगाह में तवज्जोह करते हुए अपनी हथेलियां फैला दे, और दुआ़ क़बूल होने का यक़ीन रखे और साथ ही साथ इस बात से ख़ौफ़ज़दा भी हो कि कहीं नाकाम व ना मुराद न लौटा दिया जाऊं और खु़शहा़ली का मुन्तज़िर रहे, दुआ़ करते हुए बाहमी दुश्मनी दिल से निकाल दे, रह़मते खु़दा वन्दी عَزَّوَجَلَّ की उम्मीद रखते हुए नेक निय्यती से दुआ़ करे और दुआ़ के बा'द हथेलियों को चेहरे पर फैर ले।

जुमुआ़ के आदाब

(नमाज़े जुमुआ़ पढ़ने वाले को चाहिये कि) वक़्त शुरूअ़ होने से पहले जुमुआ़ की तय्यारी शुरूअ़ कर दे, नमाज़े जुमुआ़ में ह़ाज़िरी के लिये सवेरे सवेरे त़हारत करे कि जिस्म को धोए, कपड़ों की पाकीज़गी व सफ़ाई का एहतिमाम करे, खु़शबू वगै़रा लगाए, लोगों की गरदनें न फलांगे (बल्कि जहां जगह मिले बैठ जाए), गुफ़्त–गू कम करे, कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे, इमाम के क़रीब हो कर बैठे, ख़त़ीब के हुक्म की ता'मील करे, इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर हो, पुर वक़ार और पुर सुकून हो कर चले, उंग्लियां न चटकाए, चलते हुए छोटे छोटे क़दम रखे, ख़ामोशी की आ़दत अपनाए, कसरत से ख़ालिक़ व राज़िक़ عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाए, आ़जिज़ी व इन्किसारी करते हुए मस्जिद में दाख़िल हो, सलाम का जवाब दे, ख़त़ीब के मिम्बर पर बैठ जाने के बा'द नमाज़ वगै़रा न पढ़े और ख़त़ीब के इशारा करने के बा'द सलाम का जवाब न दे, गुफ़्त–गू वगै़रा बन्द कर दे, नसीह़त क़बूल करने का पुख़्ता इरादा करे, ख़त़ीब के सामने और उस के बयान करते वक़्त इधर उधर न देखे, जब तक ख़त़ीब मिम्बर से न

उतरे और मुअज़्ज़िन इक़ामत से फ़ारिग़ न हो ले उस वक़्त तक नमाज़ के लिये खड़ा न हो (इक़ामत से पहले खड़ा न हो)।

ख़तीब के आदाब

(ख़तीब को चाहिये कि) मस्जिद में इस हालत में आए कि उस पर सकीना व वक़ार की कैफ़िय्यत तारी हो, सलाम करने में पहल करे, उस पर (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का) ख़ौफ़ और हैबत तारी हो, लोगों को आपस में गुफ़्त-गू करने से मन्अ़ करे, वक़्त का इन्तिज़ार करे फिर सन्जीदा हालत में मिम्बर की तरफ़ चले, गोया वोह पसन्द करता है कि उस का कलाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किया जाए, फिर आ़जिज़ी व इन्किसारी करते हुए मिम्बर की तरफ़ बढ़े, ज़ीने पर खड़ा हो और ज़िक्रे इलाही करता हुवा मिम्बर पर चढ़े, जो लोग सुनने के लिये जम्अ़ हों उन को सलाम के साथ[1] (मु-तवज्जेह करने के लिये) इशारा करे ताकि तवज्जोह से उस का कलाम सुनें, फिर (दिल में) ख़ुदाए क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखते हुए अज़ान सुनने के लिये बैठ जाए, आ़जिज़ी व इन्किसारी से ख़ुत्बा शुरूअ़ करे और उंग्लियों से इशारा न करे, जो वोह कह रहा है उस का ए'तिक़ाद रखे ताकि फ़ाएदा पाए, फिर लोगों को दुआ़ के लिये इशारा करे। जब मुअज़्ज़िन इक़ामत शुरूअ़ करे तो ख़तीब मिम्बर से उतर आए और उस वक़्त तक तक्बीरे तह़रीमा न कहे जब तक लोग ख़ामोश न हो जाएं, फिर नमाज़ शुरूअ़ करे और ठहर ठहर कर ख़ुश आवाज़ी से क़ुरआने पाक की तिलावत करे।

1...... अह़नाफ़ के नज़्दीक : ख़तीब के लिये सुन्नत येह है कि सलाम न करे।

(النهرالفائق شرح كنزالدقائق، كتاب الصلوة ،باب صلوة الجمعة، ج١، ص٣٥٩)

ईद के आदाब

(ईद के आदाब येह हैं) ईद की रात इबादत में गुज़ारे, ईद के दिन सुब्ह सवेरे गुस्ल करे, बदन की पाकीज़गी का ख़ूब एहतिमाम करे, खुश्बू लगाए, तक्बीरात की पाबन्दी करे, ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की कसरत करे, आजिज़ी व इन्किसारी की आदत बनाए, तक्बीरात की ज़ियादती के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी व ह़म्द भी बयान करे, नमाज़ के बा'द खुत्बए ईद सुनने के लिये ख़ामोशी इख़्तियार करे, अगर ईदुल फ़ित्र हो तो कुछ खा कर नमाज़े ईद के लिये जाए, एक रास्ते से जाए और दूसरे से वापस आए, इस ख़ौफ़ से वापस आए कि न जाने मेरी नमाज़ क़बूल भी हुई है या नहीं ।

नमाज़े ख़ुसूफ़ के आदाब[1]

(नमाज़े खुसूफ़ अदा करते वक़्त) जज़्अ व फ़ज़्अ का इज़्हार किया जाए, गुनाहों से तौबा करने में जल्दी की जाए और सुस्ती न की जाए, नमाज़ के लिये जल्दी की जाए और क़ियाम लम्बा किया जाए, दिल में ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ पैदा किया जाए ।

1...... सदरुश्शरीअह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती **मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **"बहारे शरीअ़त"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : "सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और चांद गहन की मुस्तहब । सूरज गहन की नमाज़ जमाअ़त से पढ़नी मुस्तहब है और तन्हा तन्हा भी हो सकती है और जमाअ़त से पढ़ी जाए तो खुत्बा के सिवा तमाम शराइते जुमुआ़ इस के लिये शर्त हैं, वोही शख़्स इस की जमाअ़त क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ़ की कर सकता है, वोह न हो तो तन्हा तन्हा पढ़ें, घर में या मस्जिद में ।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सए चहारुम, जि. 1, स. 787, मक-त-बतुल मदीना)

नमाज़े इस्तिस्क़ा के आदाब(1)

नमाज़े इस्तिस्क़ा से पहले रोज़ा रखा जाए, तौबा में जल्दी की जाए, ब क़द्रे इस्तिताअ़त ज़ुल्म रोकने की पूरी पूरी कोशिश की जाए, एक दूसरे पर बरतरी न जताई जाए, नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये निकलने से पहले ग़ुस्ल किया जाए, ख़ामोशी की आ़दत बनाई जाए और उस ह़ालत पर ग़ौरो फ़िक्र किया जाए जिस की वजह से बारिश रोक दी गई, उन गुनाहों का ए'तिराफ़ किया जाए जिन की वजह से येह सज़ा मिली और आयन्दा उन गुनाहों को न करने का पुख़्ता इरादा किया जाए, ख़ुत्बा सुनने के लिये ख़ामोशी इख़्तियार की जाए, तक्बीरात के दरमियान कसरत से तस्बीह़ात वग़ैरा की जाएं, इस्तिग़्फ़ार की कसरत की जाए, और दुआ़ करते हुए चादर को पलट दिया जाए (या'नी ऊपर का किनारा नीचे और नीचे का ऊपर कर दे कि ह़ाल बदलने की फ़ाल हो)।

मरीज़ के आदाब

(मरीज़ को चाहिये कि) मौत को कसरत से याद करे, तौबा करते हुए मौत की तय्यारी करे, हमेशा **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना करे, ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़ करे, आ़जिज़ी व तंगदस्ती का इज़्हार करे, ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ से मदद मांगने के साथ साथ इलाज भी कराए, क़ुव्वत व त़ाक़त मिलने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे, शिक्वा व शिकायत न करे, तीमार दारी करने वालों

1...... सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती **मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **"बहारे शरीअ़त"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : "इस्तिस्क़ा दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार का नाम है। इस्तिस्क़ा की नमाज़ जमाअ़त से जाइज़ है, मगर जमाअ़त इस के लिये सुन्नत नहीं, चाहें जमाअ़त से पढ़ें या तन्हा तन्हा दोनों त़रह़ इख़्तियार है।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सए चहारुम, जि. 1, स. 793, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

की इ़ज़्ज़त व एह़तिराम करे, मगर उन से मुसा-फ़ह़ा न करे ।[1]

ता'ज़िय्यत करने वाले के आदाब

(ता'ज़िय्यत करने वाले को चाहिये कि) आ़जिज़ी व इन्किसारी और रन्जो ग़म का इज़्हार करे, गुफ़्त-गू कम करे और मुस्कुराने से बचे कि (ऐसे मौक़अ़ पर) मुस्कुराना (दिलों में) बुग़्ज़ो कीना पैदा करता है ।

जनाज़े के साथ चलने के आदाब

(जनाज़े के साथ जाने वाले को चाहिये कि) हमेशा दिल में (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का) ख़ौफ़ रखे, निगाहें नीची रखे, गुफ़्त-गू वग़ैरा न करे, इ़ब्रत की निगाह से मय्यित को देखे, क़ब्र के सुवाल व जवाब में ग़ौरो फ़िक्र करे, जिस चीज़ के मुत़ा-लबे का ख़ौफ़ करता है (कि इस के बारे में सुवाल होगा) पुख़्ता इरादे के साथ उसे बजा लाने में जल्दी करे, मौत के अचानक ह़म्ले के वक़्त त़ारी होने वाली ह़सरत व नदामत से डरे ।

1...... ताकि कमज़ोर अ़क़ीदे वाला येह गुमान न करे कि एक मरीज़ की बीमारी दूसरे को लग जाती है । जैसा कि, ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : "जुज़ामी से ऐसे भाग जैसे शेर से भागता है ।" ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं : "येह हुक्म अ़वाम के लिये है जिन का अ़क़ीदा बिगड़ जाने का ख़ौफ़ हो कि अगर कोढ़ी के पास बैठने से इत्तिफ़ाक़न उन्हें भी कोढ़ हो जाए तो समझेंगे कि कोढ़ उड़ कर लग गई उन के लिये कोढ़ी से अ़लाहि़-दगी अच्छी है, ख़ास मु-तवक्किल लोग जिन के दिलों पर इस से कोई असर न पड़े उन के लिये येह हुक्म नहीं ।" (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 6, स. 257, मत़्बूआ़ ज़ियाउल क़ुरआन)

स-दक़ा देने वाले के आदाब

स-दक़ा करने वाले को चाहिये कि सुवाल करने से पहले स-दक़ा दे, ख़ुफ़्या त़ौर पर स-दक़ा दे और देने के बा'द भी उसे छुपाए, सुवाल करने वाले के साथ नरमी से पेश आए, उस के मांगने से पहले उसे जवाब न दे, उस के मु-तअ़ल्लिक़ वस्वसों का शिकार न हो (कि न जाने क्यूं मांग रहा है ? क्या मजबूरी है ? वग़ैरा वग़ैरा), अपने नफ़्स को बुख़्ल से रोके, साइल ने जिस चीज़ का सुवाल किया है उसे वोह चीज़ अ़त़ा कर दे या अच्छे त़रीक़े से उसे लौटा दे, अगर अ-ज़ली दुश्मन इब्लीस لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْه उस से इस के दिल में वस्वसा अन्दाज़ी करे कि साइल इस चीज़ का ह़क़दार नहीं तो इस की मुख़ा-लफ़त करते हुए साइल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा ने'मतें दिये बिग़ैर न लौटाए क्यूं कि वोह इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है। (हां ! अगर साइल मु-तअ़न्नित (या'नी पेशावर भिकारी) हो तो न दे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 5, स. 945, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना))।

साइल के आदाब

(सुवाल करने वाले को चाहिये कि) ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान करते हुए अपनी ग़ुरबत व तंगदस्ती ज़ाहिर करे, इन्तिहाई नरमी से सुवाल करे, जो चीज़ उसे दी जाए शुक्र अदा करते हुए ले ले अगर्चे कम ही क्यूं न हो और (देने वाले को) दुआ़ए ख़ैर दे, अगर उसे लौटा दिया जाए तो उ़ज़्र क़बूल करते हुए ख़ामोशी से लौट आए, बार बार आने और मांगने में इस्रार करने से बचे।

ग़नी के आदाब

(साहि़बे सरवत को चाहिये कि) आ़जिज़ी व इन्किसारी की आ़दत अपनाए, तकब्बुर से बचे, हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे, नेक आ'माल की त़रफ़ रग़बत करे, फ़क़ीर के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए और दिल खोल कर उस की मदद करे, हर किसी के सलाम का जवाब दे, क़नाअ़त पसन्दी का इज़्हार करे, अच्छी गुफ़्त–गू करे, ख़ुश उस्लूबी से लोगों को अपने साथ मानूस करे और स–दक़ा व ख़ैरात के ज़रीए उन की मदद करे ।

फ़क़ीर के आदाब

(फ़क़ीर को चाहिये कि) थोड़ी चीज़ पर सब्र व इक्तिफ़ा करे, गुरबत को छुपाए, न तो फटे पुराने कपड़े पहने और न ही (जिस्मानी) कमज़ोरी का इज़्हार करे, हि़र्स व लालच की आ़दत छोड़ दे, अहले मुरव्वत दीनदार लोगों के सामने किफ़ायत शिआ़री अपनाए, अग़्निया की ता'ज़ीमो तौक़ीर करे और उन से ज़ियादा हंसी मज़ाक़ न करे, उन (के पास मौजूद मालो दौलत) से ना उम्मीद होने के साथ साथ उन के सामने क़नाअ़त पसन्द रहे, उन पर बड़ाई न चाहे और आ़जिज़ी व इन्किसारी तर्क न करे । जब अग़्निया को देखे तो अपने दिल की हि़फ़ाज़त करे और दीन को मज़्बूत़ी से थाम ले (या'नी उस पर मज़्बूत़ी से अ़मल पैरा हो) ।

तोह़फ़ा देने वाले के आदाब

जिसे तोह़फ़ा दे रहा है उस की फ़ज़ीलत को मद्दे नज़र रखे, उस के तोह़फ़े को क़बूल कर लिया जाए तो ख़ुशी व मसर्रत का इज़्हार करे, जब तोह़फ़ा लेने वाले से मुलाक़ात करे तो उस का

शुक्रिया अदा करे, और उसे कुल्ली इख़्तियारात दे दे अगर्चे तोह़फ़ा बड़ा हो ।

तोह़फ़ा लेने वाले के आदाब

(तोह़फ़ा लेने वाले को चाहिये कि) तोह़फ़ा मिलने पर ख़ुशी का इज़्हार करे अगर्चे वोह कम क़ीमत का हो, तोह़फ़ा भेजने वाले की ग़ैर मौजू-दगी में उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करे । जब वोह आए तो ख़न्दा पेशानी के साथ उस से मुलाक़ात करे । जब क़ुदरत ह़ासिल हो तो येह भी अपने मोह़सिन को तोह़फ़ा वग़ैरा दे । जब मौक़अ़ मिले उस की ता'रीफ़ करे, उस के सामने आ़जिज़ी न करे, उस से एह़तियात़ बरते कि कहीं उस की मह़ब्बत में ईमान न चला जाए, दोबारा उस से तोह़फ़ा वग़ैरा ह़ासिल करने की ह़िर्स व त़मअ़ न करे ।

स-दक़ा व ख़ैरात के आदाब

(स-दक़ा व ख़ैरात करने वाले को चाहिये कि स-दक़ा वग़ैरा का) सुवाल करने से पहले ही स-दक़ा कर दे, अगर कोई चीज़ देने का वा'दा किया हो तो उसे पूरा करने में जल्दी करे, देते वक़्त फ़राख़ दिली से काम ले, छुपा कर स-दक़ा करे और देने के बा'द एह़सान न जतलाए, ख़ैरात वग़ैरा करने पर हमेशगी इख़्तियार करे और स-दक़ा व ख़ैरात का सिल्सिला जारी व सारी रखे ।

रोज़े के आदाब

रोज़ादार पाक व ह़लाल ग़िज़ा खाए और लज़ीज़ खाने छोड़ दे, ग़ीबत और झूट से इज्तिनाब करे, दूसरों को तक्लीफ़ न दे और आ'ज़ा को बुराइयों से बचाए ।

ह़ज के आदाब

सफ़रे ह़ज के आदाब

(ह़ज के इरादे से सफ़र करने वाले को चाहिये कि) पाक व ह़लाल माल साथ ले, किराए पर सुवारी देने वाले के साथ अच्छा बरताव करे, हम सफ़रों के साथ तआ़वुन करे और रास्ता भूलने वाले के साथ नरमी से पेश आए, (अपना) ज़ादे राह ख़र्च करे, हुस्ने अख़्लाक़ की आ़दत बनाए, अच्छी गुफ़्त–गू करे, हंसी मज़ाक़ करे तो वोह झूट और ना फ़रमानी से पाक हो, (मुआ़–मलात में) इस्लाह़ व दुरुस्ती को पसन्द करे। जब हम–सफ़र को देखे तो ख़ुशी का इज़्हार करे, हम–सफ़र की बात तवज्जोह से सुने, उस की परेशानी व उक्ताहट के वक़्त उस से तल्ख़ कलामी से पेश न आए, अपने हम–सफ़र की लग़्ज़िश से ग़फ़्लत न बरते, वोह इस की ख़िदमत करे तो उस का शुक्रिया अदा करे, उस पर ईसार करे और उस के साथ तआ़वुन करे।

एह़राम के आदाब

(ह़ाजी को चाहिये कि) एह़राम बांधने से पहले अच्छी त़रह़ ग़ुस्ल करे, एह़राम की चादरों की पाकीज़गी व सफ़ाई का ख़याल रखे, ख़ुश्बू लगाए, मुफ़्लिस व तंगदस्त की मदद करे, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ रखते हुए तल्बिया[1] कहे, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

1...... तल्बिया के अल्फ़ाज़ येह हैं :

''لَبَّیْکَ ط اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ ط لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ ط اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ ط لَاشَرِیْکَ لَکَ.''

(لباب الاحیاء،الباب السادس فی اسرارالحج ومافیه،ص ٩٠ مطبوعه دارالبیروتی)

त़रफ़ से तल्बिया के जवाब की ह़लावत व मिठास मह़सूस करते हुए बुलन्द आवाज़ से तल्बिया कहे, का'बए मुशर्रफ़ा की हु़रमत व ता'ज़ीम मद्दे नज़र रखते हुए त़वाफ़ करे, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ त़लब करते हुए सफ़ा व मर्वह की सअ़्य करे, क़ियामत को पेशे नज़र रखते हुए वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा करे, रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की उम्मीद रखते हुए मुज़्दलिफ़ा में ह़ाज़िर हो और (जहन्नम से) आज़ादी को मद्दे नज़र रखते हुए (मिना में) ह़ल्क़ करवाए, गुनाहों का कफ़्फ़ारा ख़्याल करते हुए क़ुरबानी करे, इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाते हुए रम्ये जमरात करे (या'नी "शैत़ानों" को कंकरियां मारे), पुल सिरात़ को पेशे नज़र रखते हुए त़वाफ़े ज़ियारत करे अगर्चे यहां (या'नी ख़ानए का'बा में) कोई तेज़ धार चीज़ नहीं, ह़क़ीक़ी नदामत और दिल में बार बार ह़ाज़िर होने की तड़प लिये वापस पलटे।

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के आदाब

(मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि) अ-दबो ता'ज़ीम के साथ ह़रम में दाख़िल हो, ह़सरत भरी निगाहों से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا को देखे, मस्जिदे ह़राम को पसन्दीदगी की निगाह से देखे, तक्बीर व तह्लील (या'नी اَللّٰهُ اَكْبَر और لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه) कहते हुए बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र डाले, तसल्सुल के साथ त़वाफ़े का'बा व उ़म्रह करे, बैतुल्लाह शरीफ़ की अ़-ज़मत व हु़रमत को पेशे नज़र रखते हुए इस में दाख़िल हो और दाख़िल होने के बा'द लगातार तौबा करता रहे।

मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के आदाब

(मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में दाखि़ल होने वाले को चाहिये कि) पुर वक़ार व पुर सुकून ह़ालत में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में दाखि़ल हो, शरीअ़त के हुक्म के मुत़ाबिक़ उस का मुशा–हदा करे, आंखें बुलन्द करते हुए उस पर नज़र डाले, फिर इस ह़ालत में मस्जिद व मिम्बरे रसूल عَلٰی صَاحِبِهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास आए गोया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कैफ़िय्यते नमाज़ व ख़ुत़्बा को मुला–ह़ज़ा कर रहा है, और रौज़ए रसूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर इस ह़ालत में ह़ाज़िर हो गोया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का दीदार कर रहा है। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो तो आवाज़ पस्त रखते हुए इस त़रह़ गुफ़्त–गू करे गोया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़फ़िल का आंखों से मुशा–हदा कर रहा है, पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में और फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों अस्ह़ाब (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़े अक्बर व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की बारगाह में सलाम पेश करते हुए इन दोनों की सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इन के साथ मह़ब्बत का मुशा–हदा करे, और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाह में इन दोनों की मक़्बूलिय्यत व इ़ज़्ज़त को मद्दे नज़र रखे, इन दोनों का सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से डर व ख़ौफ़ और दोनों की निगाहों में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत व मक़्बूलिय्यत को देखे और जब रौज़ए अन्वर से पलटे तो उस की त़रफ़ पीठ न करे।

ताजिर के आदाब

(तिजारत करने वाले को चाहिये कि) मुसल्मानों के रास्ते में न बैठे कि इस से उन्हें चलने में दुश्वारी होगी, ऐसे समझदार व ज़हीन ग़ुलाम (नोकर) को काम के लिये रखे कि जो न तो नाप तोल में और न ही वज़्न में कमी करे, उसे बराबरी का हुक्म दे, सामान वग़ैरा तोलने में जल्दी न करे, उस का तराज़ू दुरुस्ती में सुनार के तराज़ू और ए'तिदाल में मे'यारी तराज़ू की त़रह़ हो, उस की डोरियां लम्बी और ऊपरी किनारे बारीक हों, उस के छोटे बड़े तमाम बाट वज़्न में पूरे हों, रोज़ाना सब से पहले तराज़ू साफ़ करे, रत़ल और संगे तराज़ू (बट या'नी तोल वग़ैरा के पथ्थर) के ऐबों का ख़ास ख़याल रखे, ग़ुलाम (नोकर) को हुक्म दे कि तेल और रोग़नियात वग़ैरा तोलते वक़्त एह़तियात़ से काम ले। जब कोई मुहज़्ज़ब शख़्स कुछ लेने आए तो उस की इ़ज़्ज़त व तक्रीम करे, पड़ोसी आए तो उस पर एह़सान करे, कोई ज़ईफ़ व ना तुवां आए तो उस के साथ शफ़्क़त व मेह्रबानी से पेश आए या इन के इ़लावा कोई भी आए तो उस के साथ इन्साफ़ से पेश आए, चीज़ों को उन की क़ीमत व भाव की मिक़्दार के ए'तिबार से बेचे, अगर किसी चीज़ की क़ीमत कम हो तो (बेचने वाला) ख़रीदार को ज़ियादा क़ीमत में दे सकता है जैसा कि बा'ज़ अवक़ात अगर चीज़ की क़ीमत ज़ियादा हो तो वोह ख़रीदार को कम क़ीमत में दे देता है। उस की तमाम तर तवज्जोह दर्से क़ुरआन (और इ़ल्मे दीन) की मह़फ़िल में ह़ाज़िरी की त़रफ़ रहे, ग़ैर मह़रमों और अम्रदों को देखने से निगाहों को बचाए रखे वाक़िफ़ कार बे वुक़ूफ़ से अपनी इ़ज़्ज़त बचाए, साइल को ना मुराद न लौटाए, ख़ुशी मिलने पर अ़त़िय्या व बख़्शिश को न रोके।

ताजिर ने जो काम मुलाज़िम पर लाज़िम किया है अगर खुद उस का ज़िम्मादार है तो बेहतर येह है कि खुद करे। नाप तोल और वज़्न करने का पैमाना और तराज़ू का पथ्थर मो'तबर व क़ाबिले ए'तिमाद लोगों से ख़रीदे, बेचते वक़्त माल की झूटी ता'रीफ़ और ख़रीदते वक़्त बे जा मज़म्मत न करे, लोगों को कोई ख़बर वग़ैरा देते या सुनाते वक़्त सच्चाई से काम ले, नीलामी के वक़्त फ़ोहूश गोई और गुफ़्त-गू करते वक़्त झूट बोलने से बचे, दुकानदारों के साथ बेहूदा व लग़्व बातों में न पड़े और नए लोगों के साथ हंसी मज़ाक़ न करे और लड़ाई झगड़ा न करे।

सिक्के परखने वाले के आदाब

(सिक्के की जांच पड़ताल करने वाले को चाहिये कि) ह़क़ीक़त व सच्चाई पर यक़ीन रखे, अमानतों की अदाएगी करे, सूद से बचे, उधार की अदाएगी में जल्दी करे, लोगों को खोटे सिक्के न दे, तोल वग़ैरा में वज़्न को पूरा करे, धोका और मिलावट वग़ैरा न करे कि इस से अपना मे'यार खो बैठेगा और संगे तराज़ू (तोल वग़ैरा के पथ्थर) और वज़्न के पैमानों में कमी करने से डरे।

सुनार के आदाब

(सोने का काम करने वाले को चाहिये कि) बुज़ुर्गाने दीन की नसीह़त पर अ़मल करे, ज़ेवरात को उ़म्दा व ख़ूब सूरत बनाने में ख़ूब कोशिश करे, टालम टोल से काम न ले बल्कि जो वा'दा किया हो उसे पूरा करे, काम की उजरत लेने में ज़ियादती न करे।

खाने के आदाब

खाने के अव्वल आख़िर खाने का वुज़ू करे या'नी दोनों हाथ धोए, खाना शुरूअ़ करने से पहले بِسْمِ اللّٰہِ शरीफ़ पढ़े, सीधे हाथ से और अपने सामने से खाए, छोटे छोटे लुक़्मे ले और अच्छी त़रह़ चबा चबा कर खाए, खाने वालों के चेहरों की त़रफ़ नज़रें न जमाए (या'नी दूसरों के लुक़्मे न ताड़े), टेक लगा कर न खाए, भूक से ज़ियादा न खाए। जब पेट भर जाए तो हाथ रोक ले जब कि मेहमान या जिसे अभी खाने की ह़ाजत हो, शर्म मह़सूस न करें, बरतन की एक त़रफ़ से खाए, दरमियान में से न खाए, खाने के बा'द उंग्लियों को चाट ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान करे (या'नी खाने के बा'द की दुआ़[1] पढ़े), खाना खाते हुए मौत को याद न किया जाए ताकि लोग खाने से हाथ न खींच लें।

पानी पीने के आदाब

पानी या कोई भी चीज़ पीने से पहले बरतन में अच्छी त़रह़ देख ले कि कहीं कोई मूज़ी चीज़ तो नहीं, पीने से पहले بِسْمِ اللّٰہ शरीफ़ पढ़े और पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे, चूस चूस कर पिये और किसी क़िस्म का ऐ़ब न निकाले, तीन सांस में पानी पिये, हर बार सांस लेने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे और दोबारा पीने से पहले بِسْمِ اللّٰہ शरीफ़ पढ़े, खड़े हो कर न पिये और अगर उस के साथ और भी लोग हों तो पिलाते वक़्त अपनी सीधी त़रफ़ से इब्तिदा करे।

1...... खाने के बा'द की दुआ़ येह है :

''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْن.''

(سننِ ابی داؤد، کتاب الاطعۃ، باب مایقول الرجل اذاطعم، الحدیث ۳۸۵۰، ص۱۵۰۶)

निकाह़ करने वाले के आदाब

अगर निकाह़ का इरादा हो तो पहले दीन फिर हुस्नो जमाल और मालो दौलत देखे, लड़की वाले जो कुछ उसे देंगे उस का उन्हें पाबन्द न करे, निकाह़ का इरादा हो तो उसे पोशीदा न रखे, किसी मुसल्मान के पैग़ामे निकाह़ पर निकाह़ का पैग़ाम न दे, अपनी मम्लूका चीज़ों और शादी वग़ैरा में (किसी को ऐसे काम की) इजाज़त न दे जो उसे रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूर कर दे और उस की इ़ज़्ज़त को दाग़दार करने का बाइ़स बने, तन्हाई में बीवी के साथ ऐसी जगह न बैठे जहां कोई दूसरा उस की बीवी को देखे, अपने घर वालों के सामने उस का बोसा न ले। जब तन्हाई में हो तो औ़रत के सामने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार करे, उस का क़ासिद झूटा न हो और जिस से लड़की के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा जाए वोह भी चुग़ुल ख़ोर न हो बल्कि उस के ख़ास रिश्तेदारों में से हो और उस शख़्स से लड़की के दीन, नमाज़ रोज़े की पाबन्दी, शर्मो ह़या, पाकीज़गी, हुस्ने कलाम व बद कलामी, ख़ाना नशीन रहने और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करने के मु-तअ़ल्लिक़ पूछे, अ़क़्दे निकाह़ से पहले उसे देख ले[1] और निकाह़ के बा'द अच्छी गुफ़्त-गू करते हुए उन बातों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछे जो इसे पहुंची हैं और उस से वालिदैन की आ़दतों, ह़ालात व कैफ़िय्यात और दीन व आ'माल के मु-तअ़ल्लिक़ पूछगछ करे।

1...... ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान नई़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीस कि "एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया बोला मैं ने एक अन्सारी औ़रत से निकाह़ लेना है। फ़रमाया : उसे देख लो क्यूं कि अन्सार की आंख में कुछ होता है।" की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "देखने से मुराद चेहरा देखना है कि हुस्न व क़ुब्ह़ (या'नी ख़ूब सूरत व बद सूरत होना) चेहरे ही में होता है और इस से मुराद वोही सूरत है जो अभी अ़र्ज़ की गई या'नी किसी बहाने से देख लेना या किसी मो'तबर औ़रत से दिखवा लेना न कि बा क़ाइदा औ़रत का इन्टरव्यू करना जैसा कि आज कल के बे दीनों ने समझा।"
(मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 5, स. 12, मत्बूआ़ ज़ियाउल क़ुरआन)

निकाह़ करने वाली के आदाब

(जिस औ़रत को पैग़ामे निकाह़ दिया जाए उसे चाहिये कि) अपने घर के क़ाबिले ए'तिमाद मर्द को कहे कि वोह निकाह़ का पैग़ाम देने वाले के मज़्हब, दीन, अ़क़ीदे, साह़िबे मुरव्वत होने और अपने वा'दे में सच्चा होने के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करे, औ़रत मर्द के किसी क़रीबी रिश्तेदार को देख ले और मा'लूमात ह़ासिल करे कि उस के घर कौन आता जाता है। नीज़ उस की बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी से मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करे और येह कि वोह अपने कारोबार और तिजारत में मुख़्लिस है या नहीं ? और उस के दीन और सीरत में दिल चस्पी रखे न कि मालो दौलत और शोहरत में। उस के साथ क़नाअ़त इख़्तियार करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने का अ़ज़्म करे, उस के हुक्म की फ़रमां बरदारी करे कि येह उल्फ़त व मह़ब्बत को मज़्बूत़ व मुस्तह़्कम करने और पायए तक्मील तक पहुंचाने का सबब है।

जिमाअ़ के आदाब

(हम बिस्तरी करने वाले को चाहिये कि) ख़ुश्बू लगाए, अच्छी गुफ़्त-गू करे, मह़ब्बत का इज़्हार करे, शह्वत के साथ बोसो कनार करे, चाहत व दिल चस्पी का इज़्हार करे, फिर بِسْمِ الله शरीफ़ पढ़े, शर्मगाह की त़रफ़ न देखे कि येह (या'नी शर्मगाह की त़रफ़ देखना) अन्धी औलाद पैदा होने का बाइ़स है, सित्र को किसी कपड़े वग़ैरा से छुपा ले और क़िब्ला की सम्त रुख़ न करे।

बीवी के आदाब

(शोहर को चाहिये कि) बीवी के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए, नरमी के साथ गुफ़्त-गू करे, मह़ब्बत व चाहत का इज़्हार करे, तन्हाई में उस के साथ ख़ुश मिज़ाजी और बे तकल्लुफ़ी से पेश आए,

लग़्ज़िशों से दर गुज़र करे, लड़ाई झगड़ा न करे, उस की इ़ज़्ज़त की हि़फ़ाज़त करे, किसी मुआ़-मले में उस से बह़सो मुबा-ह़सा न करे, बिग़ैर कन्जूसी किये उस की मुआ़-वनत करे, उस के घर वालों की इ़ज़्ज़त व ता'ज़ीम करे, हमेशा अच्छे वा'दे करे, अपनी बीवी पर शदीद ग़ैरत खाए (कि वोह अपना हुस्नो जमाल ग़ैर के सामने ज़ाहिर न करे) ।

शोहर के आदाब

(बीवी को चाहिये कि) हमेशा शोहर से ह़या करे, उस से लड़ाई झगड़ा न करे, हमेशा शोहर के हर हुक्म की इत़ाअ़त करे। जब शोहर कलाम करे तो ख़ामोशी इख़्तियार करे, उस की ग़ैर मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त की हि़फ़ाज़त करे, शोहर के माल में ख़ियानत न करे, ख़ुश्बू वग़ैरा लगाए, मुंह की सफ़ाई और कपड़ों की पाकीज़गी का ख़ास ख़याल रखे, क़नाअ़त पसन्दी इख़्तियार करे, मह़ब्बत व शफ़्क़त का अन्दाज़ अपनाए, ज़ैबो ज़ीनत की पाबन्दी करे, शोहर के घर वालों और क़राबत दारों का एह़तिराम करे, अच्छे अन्दाज़ में उस का ह़ाल दरयाफ़्त करे, उस के हर काम को शुक्रिया के साथ क़बूल करे, जब शोहर का क़ुर्ब पाए तो उस से मह़ब्बत का इज़्हार और जब उसे देखे तो ख़ुशी व मसर्रत का इज़्हार करे।

आदमी पर अपने नफ़्स के आदाब

नमाज़े जुमुआ़ और बा जमाअ़त नमाज़ पर हमेशगी इख़्तियार करे, लिबास की पाकीज़गी व सफ़ाई का ख़याल रखे, हमेशा मिस्वाक करने की आ़दत बनाए, न तो शोहरत वाला लिबास पहने और न ही ऐसा लिबास पहने कि जिस की वजह से लोग उसे ह़क़ारत की नज़रों से देखें, न तो बत़ौरे तकब्बुर इतने लम्बे कपड़े

पहने कि टख़्नों से नीचे लटक जाएं और न ही इतने छोटे हों कि लोग मज़ाक़ उड़ाने लगें, न चलने फिरने में इधर उधर देखे, न ग़ैर महरम की त़रफ़ देखे, गुफ़्त–गू के दौरान बार बार थू थू न करे, न पड़ोसियों के साथ अपने घर के दरवाज़े पर ज़ियादा देर बैठे और न ही अपने दोस्तों से अपनी बीवी और घर के पोशीदा मुआ़–मलात के मु–तअ़ल्लिक़ गुफ़्त–गू करे।

औ़रत पर अपने नफ़्स के आदाब

औ़रत को चाहिये कि हमेशा अपने घर की चार दीवारी में गोशा नशीन रहे, (बिला ज़रूरत) छत पर बार बार न चढ़े, अपनी गुफ़्त–गू पर पड़ोसियों को आगाह न करे (या'नी इतनी आवाज़ में गुफ़्त–गू करे कि उस की आवाज़ चार दीवारी से बाहर न जाए), बिला ज़रूरत पड़ोसियों के पास आया जाया न करे, जब उस का शोहर उस की त़रफ़ देखे तो उसे ख़ुश करे, शोहर की ग़ैर मौजू–दगी में उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, घर से न निकले, हां ! (ज़रूरतन) अगर किसी काम से निकलना पड़े तो बा पर्दा हो कर निकले, ऐसे रास्ते और जगह से गुज़रे जहां ज़ियादा हुजूम और आ–मदो रफ़्त न हो, अपनी ग़ुरबत वग़ैरा को छुपाए बल्कि जो उसे जानता हो उस के सामने इन्कार कर दे, अपनी तमाम तर कोशिश नफ़्स की इस्लाह़ और घरेलू मुआ़–मलात की दुरुस्ती में सर्फ़ करे, नमाज़ रोज़े की पाबन्दी करे, अपने उ़यूब पर नज़र रखे, दीनी मुआ़–मले में ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर करे, ख़ामोशी की आ़दत बनाए, निगाहें नीची रखे, अपने दिल में रब्बे जब्बार عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करे, कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे, अपने शोहर की फ़रमां बरदार रहे, उसे रिज़्क़े ह़लाल कमाने की तरग़ीब दिलाए, तह़ाइफ़ वग़ैरा की ज़ियादा फ़रमाइश न करे, शर्मो ह़या को लाज़िम पकड़े, बद ज़बानी व फ़ोह़्श

कलामी न करे, सब्रो शुक्र करे, अपने नफ़्स के मुआ-मले में ईसार करे, अपनी हालत और ख़ूराक के मुआ-मले में खुद को तसल्ली दे, जब शोहर का दोस्त घर में आने की इजाज़त चाहे और शोहर घर में मौजूद न हो तो उसे घर में आने की इजाज़त न दे और अपने नफ़्स और शोहर से ग़ैरत करते हुए उस से कस्रते कलाम न करे ।

घर में दाख़िले की इजाज़त के आदाब

(घर में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि) दीवार की जानिब हो कर चले, दरवाज़े के सामने खड़ा न हो, दरवाज़ा खट-खटाने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह व तह्मीद करे और इस के बा'द सलाम करे, घर में मौजूद लोगों की बातें न सुने, सलाम करने के बा'द दाख़िल होने की इजाज़त तलब करे पस अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक वरना वापस लौट आए, वहां खड़ा न रहे, और "اَنَا या'नी मैं" न कहे बल्कि अपना नाम बताए ताकि साहिबे ख़ाना उस को पहचान ले ।

रास्ते में बैठने के आदाब

(रास्ते में बैठने वाले को चाहिये कि) निगाहें झुका कर बैठे, मज़्लूम की मदद करे, सितम रसीदा व हसरत ज़दा की फ़रियाद रसी करे, ज़ईफ़ व कमज़ोर की मदद करे, रास्ता भूले हुए की राहनुमाई करे, सलाम का जवाब दे, सुवाल करने वाले को कुछ न कुछ अ़ता करे, इधर उधर मु-तवज्जेह न हो, लताफ़त व शफ़्क़त के साथ नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे, अगर किसी को गुनाहों पर इस्रार करने वाला पाए तो उसे डराए और उस पर सख़्ती करे (या'नी ब क़द्रे इस्तिताअ़त उसे रोकने की कोशिश करे), बिग़ैर दलील के किसी चुग़ुल ख़ोर की बातों पर ध्यान दे न किसी की टोह

में पड़े और लोगों के बारे में अच्छा गुमान रखे।

रहन सहन के आदाब

(लोगों के साथ मिल जुल कर रहने वाले को चाहिये कि) जब किसी इज्तिमाअ़ या मह़फ़िल में जाए तो सलाम करे और आगे जाना मुम्किन न हो तो जहां जगह मिले बैठ जाए और लोगों की गरदनें न फलांगे, जब बैठे तो अपने क़रीब वाले को ख़ास त़ौर पर सलाम करे, अगर आ़म लोगों की मह़फ़िल में जाए तो उन के साथ बेहूदा बातों में न पड़े, उन की झूटी ख़बरों और अफ़्वाहों पर ध्यान न दे और उन में जारी बुरी बातों की त़रफ़ तवज्जोह न दे, बिग़ैर किसी सख़्त मजबूरी के आ़म लोगों से मेलजोल कम रखे, लोगों में से किसी को ह़क़ीर न समझे वरना येह हलाक व बरबाद हो जाएगा क्यूं कि येह नहीं जानता, हो सकता है कि वोह इस से बेहतर हो, दुन्यादार होने की वजह से ता'ज़ीमी निगाहों से उन की त़रफ़ न देखे क्यूं कि दुन्या और जो कुछ इस में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उस की कुछ अहम्मिय्यत नहीं, अपने दिल में दुन्या की क़द्रो मन्ज़िलत पैदा न होने दे कि इस की वजह से अहले दुन्या की ता'ज़ीमो तौक़ीर करने लगेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस का मर्तबा कम हो जाएगा। लोगों से दुन्या ह़ासिल करने के लिये अपने दीन को दाव पर न लगाए क्यूं कि ऐसा करने से लोगों की नज़रों में उस की क़द्रो मन्ज़िलत ख़त्म हो जाएगी। लोगों से अ़दावत (या'नी दुश्मनी) न रखे कि उन के दिल में भी दुश्मनी पैदा हो जाएगी ह़ालां कि वोह इस की त़ाक़त नहीं रखता और न ही इसे बरदाश्त कर सकता है। किसी से अ़दावत रखे तो मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर रखे। पस उन के बुरे अफ़्आ़ल से नफ़रत करे, उन की त़रफ़ रह़मत व शफ़्क़त भरी नज़रों से देखे, अगर वोह उस से मह़ब्बत करें, उस की ता'ज़ीमो

तौक़ीर करें, उसे देख कर उन के चेहरे खिल उठें और वोह उस की ता'रीफ़ो तौसीफ़ करें तो फिर भी उन के पास कसरत से न आए कि ह़क़ीक़त में कम लोग ही उसे चाहते हैं। अगर वोह उन के पास कसरत से जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उन के सिपुर्द कर देगा फिर वोह हलाक हो जाएगा। इस बात की ह़िर्स व लालच न करे कि वोह उस की ग़ैर मौजू-दगी में भी उस के साथ ऐसा ही गुमान रखें जैसा उस की मौजू-दगी में रखते हैं क्यूं कि येह चीज़ हमेशा नहीं पाई जाती, लोगों के पास मौजूद चीज़ को ह़ासिल करने में ह़िर्स व लालच न करे कि इस त़रह़ वोह उन के सामने ज़लील हो जाएगा और अपना दीन ज़ाएअ़ कर बैठेगा। और उन पर बड़ाई न चाहे। जब उन में से किसी से अपनी ह़ाजत का सुवाल करे और वोह उसे पूरा कर दे तो वोह उस का ऐसा भाई है जिस से फ़ाएदा ह़ासिल किया जाता है और अगर उस ने इस की ह़ाजत पूरी न की तो उस की मज़म्मत न करे कि इस त़रह़ उस के दिल में दुश्मनी पैदा हो जाएगी, लोगों में से किसी को नसीह़त न करे, अलबत्ता! जब किसी में क़बूलिय्यत के आसार देखे तो नसीह़त करे, वरना वोह उस से अ़दावत रखेगा और उस की बात नहीं मानेगा।

अगर लोगों में भलाई, इ़ज़्ज़त व शराफ़त या ख़ूबी देखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करे और उसी की ता'रीफ़ करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करे कि वोह इसे लोगों के सिपुर्द न करे। जब लोगों के किसी शर पर आगाह हो या उन में बुरी बात या ग़ीबत या कोई ना पसन्दीदा चीज़ देखे तो उन का मुआ़-मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ दे और उन के शर से उस की पनाह मांगे और उस से उन के ख़िलाफ़ मदद त़लब करे और उन पर इ़ताब व मलामत न करे कि वोह उन पर इ़ताब की कोई राह न पाएगा मगर येह कि वोह इस के दुश्मन हो जाएंगे और इस का गुस्सा भी ठन्डा न होगा बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाहों पर सच्ची तौबा करे जिन की वजह

से लोगों को उस पर मुसल्लत् किया गया और उस से मग़्फ़िरत त़लब करे और लोगों की ह़क़ बात सुनने वाला बन जाए और ग़लत़ बातें सुनने से बहरा हो जाए।

वालिदैन के आदाब

(बेटे को चाहिये कि) वालिदैन की बात तवज्जोह से सुने, मां बाप जब खड़े हों तो ता'ज़ीमन उन के लिये खड़ा हो जाए, जब वोह किसी काम का हुक्म दें तो फ़ौरन बजा लाए, उन दोनों के खाने पीने का इन्तिज़ाम व इन्सिराम करे और नर्म दिली से उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछाए, वोह अगर कोई बात बार बार कहें तो उन से उक्ता न जाए, उन के साथ भलाई करे तो उन पर एह़सान न जतलाए, वोह कोई काम कहें तो उसे पूरा करने में किसी क़िस्म की शर्त़ न लगाए, उन की त़रफ़ ह़क़ारत की निगाह से न देखे और न ही किसी मुआ़-मले में उन की ना फ़रमानी करे।

औलाद के आदाब

(वालिद को चाहिये कि) नेकी व एह़सान में औलाद की मदद करे और उन्हें त़ाक़त से ज़ियादा भलाई का पाबन्द न करे, उन की परेशानी व तंगदस्ती के वक़्त उन से किसी चीज़ का मुत़ा-लबा न करे, उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से मन्अ़ न करे और उन की तरबिय्यत व परवरिश करने पर उन पर एह़सान न जतलाए।

इस्लामी भाईचारे के आदाब

(एक मुसल्मान को चाहिये कि) भाइयों से मुलाक़ात के वक़्त ख़ुशी व मसर्रत का इज़्हार करे, गुफ़्त-गू करते हुए सलाम से इब्तिदा करे, जब मिल कर बैठें तो उन की वह़्शत दूर करते हुए उन्हें अपने

से मानूस करे, उन के लिये कुशा-दगी व वुस्अ़त पैदा करे। जब वोह जाने के लिये खड़े हों तो उन्हें रुख़्सत करने के लिये दरवाज़े तक जाए, कोई कलाम कर रहा हो तो ख़ामोशी इख़्तियार करे और गुफ़्त-गू में लड़ाई झगड़े को ना पसन्द करे, ह़िकायात वग़ैरा को उ़म्दगी व ख़ूबी के साथ बयान करे, दौराने गुफ़्त-गू ही जवाब दे बा'द में न दे और जब भाइयों को पुकारे तो पसन्दीदा और अच्छे नामों के साथ पुकारे।

पड़ोसी के आदाब

जब कोई शख़्स अपने पड़ोसी से मुलाक़ात करे तो सलाम करने में पहल करे, गुफ़्त-गू करते हुए बात को ज़ियादा तूल न दे, न उस से ज़ियादा सुवाल करे, पड़ोसी बीमार हो तो उस की इ़यादत करे, उसे कोई मुसीबत पहुंचे तो उस से ता'ज़ियत करते हुए उसे तसल्ली दे। जब उस को कोई ख़ुशी ह़ासिल हो तो उसे मुबारक बाद दे, पड़ोसी के लड़के और मुलाज़िम के साथ नरमी व मेह्रबानी से गुफ़्त-गू करते हुए ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए, पड़ोसी की ग़-लती पर उस से दर गुज़र करे, उस की लग़्ज़िश व ख़त़ा पर नरमी से उस पर इ़ताब करे, उस के घर की औ़रतों को देखने से अपनी निगाहों को बचाए, वोह फ़रियाद करे तो उस की मदद करे और उस की मुलाज़िमा (या'नी नोकरानी) की त़रफ़ भी न देखे।

ग़ुलाम के आदाब

(आक़ा को चाहिये कि) ग़ुलाम को अपनी ख़िदमत के लिये ऐसे काम का पाबन्द न करे जिस की वोह त़ाक़त न रखता हो, उस की परेशानी व उक्ताहट के वक़्त उस के साथ नरमी से पेश आए, हर

वक़्त उसे मारपीट करे न गाली गलोच । क्यूं कि ऐसा करने से गु़लाम उसी (आक़ा) पर निडर व दिलेर हो जाएगा, उस से कोई ग़-लती हो जाए तो उस से दर गुज़र करे, वोह कोई उ़ज़्र पेश करे तो क़बूल करे, जब गु़लाम उस के लिये खाना लगाए तो उसे अपने साथ दस्तर ख़्वान पर बिठाए या अपने खाने में से चन्द लुक़्मे उसे दे दे ।

आक़ा के आदाब

(गु़लाम को चाहिये कि) आक़ा के हुक्म की ता'मील करे, उस की ग़ैर मौजू-दगी में भी उस के लिये मुख़्लिस हो (या'नी उस के ख़िलाफ़ कोई साज़िश वग़ैरा न करे), उस की इ़ज़्ज़त की हि़फ़ाज़त करे, आक़ा की औलाद के साथ अच्छा बरताव करे और उस के माल वग़ैरा में भी ख़ियानत न करे ।

रिआ़या के आदाब

(हा़किम को चाहिये कि) नरमी की आ़दत अपनाए, मलामत न करे, किसी भी काम का हुक्म देने से पहले उस में ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर ले, ख़ास लोगों पर बड़ाई न चाहे, उन से मुआ-ख़ज़ा भी न करे, नर्म त़बीअ़त अपनाते हुए आ़म लोगों के साथ मह़ब्बत व उल्फ़त से पेश आए, रिआ़या के मुआ़-मलात की ख़बर रखे, अहले इ़ल्म के साथ अच्छे अख़्लाक़ से पेश आए, अहले इ़ल्म, दोस्तों और रिश्तेदारों पर वुस्अ़त व कुशा-दगी करे, अगर किसी से कोई जुर्म हो जाए तो उस से नरमी करे और रिआ़या के मुआ़-मलात की हि़फ़ाज़त व निगरानी करे ।

हा़किम के आदाब

(रिआ़या को चाहिये कि) हा़किम के दरवाजे़ पर आना जाना कम रखे, उस से उसी काम में मदद ले जो उस की ज़िम्मादारी है अगर्चे वोह नर्म त़बीअ़त का मालिक हो फिर भी हर वक़्त उस का ख़ौफ़ दिल में रखे, अगर्चे वोह ख़ुश मिज़ाज और नर्म दिल हो फिर भी उस पर जुरअत व दिलेरी का मुज़ा-हरा न करे, अगर्चे वोह सुवाल पूरा कर देता हो फिर भी उस से सुवाल कम करे। जब हा़किम मौजूद हो तो उस के लिये दुआ़ करे, उस के मु-तअ़ल्लिक़ ना जे़बा कलाम न करे। जब मौजूद न हो तो उस की ता'रीफ़ो तौसीफ़ करे।

क़ाज़ी के आदाब

(क़ाज़ी को चाहिये कि) हमेशा ख़ामोशी इख़्तियार करे, सब्रो तह़म्मुल को अपना शिआ़र बनाए, आ'ज़ा को पुर सुकून रखे, लोगों को ज़ुल्म व ज़ियादती और फ़साद बरपा करने से रोके, हा़जत मन्दों के साथ नरमी व शफ़क़त से पेश आए, यतीम के मुआ़-मले में एह़तियात़ से काम ले, जवाब देने में जल्दी न करे, झगड़ा करने वालों के साथ नर्म बरताव करे, बाहम मुख़ालिफ़ दो आदमियों में से किसी एक की त़रफ़ रग़बत व मैलान न रखे, झगड़ा करने वालों को वा'ज़ो नसीह़त करे, हमेशा दुरुस्त फ़ैसला करने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात का सहारा ले।

गवाह के आदाब

(गवाही देने वाले को चाहिये कि) अमानत की ह़िफ़ाज़त करे, ख़ियानत न करे, गवाही देते वक़्त एह़तियात़ से काम ले, भूल चूक से बचे और ह़ाकिम से झगड़ा न करे।

जिहाद के आदाब

(मुजाहिद को चाहिये कि) ख़ुलूसे दिल से जिहाद करे, फ़क़त़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये ग़ैज़ो ग़ज़ब का इज़्हार करे, पूरी त़ाक़त व कोशिश के साथ जिहाद करे, जिहाद करते हुए सर धड़ की बाज़ी लगा दे, वापस पलटने की ख़्वाहिश दिल से निकाल दे, मह़ज़ इस निय्यत से जिहाद करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलिमा बुलन्द हो, माले ग़नीमत में ख़ियानत न करे, क़र्ज़ वग़ैरा हो तो जिहाद में जाने से पहले उसे अदा कर दे, क़िताल करते वक़्त और हर ह़ाल में ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ को अपना रफ़ीक़ व हम नशीन बना ले।

क़ैदी के आदाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी से रिहाई की उम्मीद न रखे, उस की ना फ़रमानी में अपने नफ़्स को ज़लील न करे, ख़ुदाए रह़मान व रह़ीम عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न हो, अपने तमाम के तमाम ग़मों और परेशानियों को ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करे, और उस की मदद व नुस्रत का यक़ीन रखे, दुश्मन के उस माल में हाथ न डाले जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये मुबाह़ (या'नी ह़लाल) नहीं किया और जब्बार व क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी की पनाह त़लब न करे।

मु-तफ़र्रिक़ आदाब

(बा'ज़ हु-कमा ने येह आदाब बयान फ़रमाए हैं)

अपने दोस्त व दुश्मन को ज़लीलो रुस्वा किये बिग़ैर ख़न्दा पेशानी से उन के साथ मुलाक़ात कर, उन से ख़ौफ़ज़दा न हो, उन पर बड़ाई व बरतरी की तमन्ना किये बिग़ैर उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर कर, अपने तमाम उमूर में मियाना रवी इख़्तियार कर, गुरूर व तकब्बुर न कर, इधर उधर तवज्जोह करने से बच, लोगों के मज्मओं का मुआ-यना न कर। जब तू कहीं बैठे तो बुलन्द हो कर बैठ और अपनी उंग्लियों को चटकाने, अंगूठी के साथ खेलने, दांतों का ख़िलाल (या'नी सफ़ाई) करने, बार बार नाक में हाथ डालने (या'नी उसे साफ़ करने), चेहरे से मख्खियां उड़ाने, और कसरत से अंगड़ाई और जमाही लेने से बच, तेरी महफ़िल पुर सुकून और कलाम पुर दलील हो, जो तुझ से गुफ़्त-गू करे उस के उ़म्दगिये कलाम की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर न तो तअ़ज्जुब कर, न आ़जिज़ी व बेचारगी का इज़्हार कर और न ही उस से बे तअ़ल्लुक़ होने की कोशिश कर, हंसी मज़ाक़ और ह़िकायात वग़ैरा बयान करने पर इस का मुआ-ख़ज़ा न कर, अपनी औलाद और ख़ादिमा के हुस्नो जमाल के मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू न कर, न तो सजी संवरी औरत की त़रह़ बन ठन कर रह और न ही गुलाम की त़रह़ छिछोरा पन इख़्तियार कर। तमाम उमूर में मियाना रवी इख़्तियार कर, कसरत से सुरमा लगाने और बालों में तेल डालने में इस्राफ़ करने से बच, ह़िकायात वग़ैरा बयान करने में शोख़ी न जता, अपने अहलो इ़याल को ज़ियादा शोहरत न दे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की वजह येह बयान फ़रमाई : "क्यूं कि अगर शोहरत कम होगी तो तुम्हारे नज़्दीक इस की कोई अहम्मिय्यत न होगी और अगर ज़ियादा होगी तो फिर भी तू अहलो इ़याल को राज़ी न कर सकेगा।" उन से

बिग़ैर किसी लालच के महब्बत कर और बिग़ैर किसी ख़ौफ़ के उन के लिये नर्म ख़ू हो जा। जब तेरी किसी से तल्ख़ कलामी हो जाए तो सामने वाले की इ़ज़्ज़त का ख़याल रख और अपनी दलील में ग़ौरो फ़िक्र कर और हाथ से किसी की त़रफ़ इशारा न कर और घुटनों के बल न बैठ। जब तेरा ग़ुस्सा ख़त्म हो जाए तब कलाम कर।

अगर तुझे बादशाह की सोह़बत मुयस्सर आए तो उस से ख़ौफ़ज़दा रह और अपने बारे में उस की ह़ालत व राय के तब्दील होने से अम्न में न रह और बादशाह के साथ इस त़रह़ शफ़्क़त व नरमी से पेश आ, जिस त़रह़ बच्चे पर शफ़्क़त व नरमी करता है, बादशाह की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ उस से कलाम कर, अगर्चे बादशाह तेरी बात सुन लेता है फिर भी उस के, उस के घर वालों, उस की औलाद और उस के रिश्तेदारों के मुआ़-मलात में दख़्ल अन्दाज़ी मत कर।

अपने पसन्दीदा दोस्तों से ख़ास त़ौर पर बच क्यूं कि वोह तेरे दुश्मनों में से एक हैं और अपने माल को अपनी इ़ज़्ज़त से ज़ियादा अ़ज़ीज़ न जान। जब लोगों के दरमियान हो तो कसरत से थूकने से गुरेज़ कर क्यूं कि ऐसा करने वाले को औ़रतों की त़रफ़ मन्सूब किया जाता है, और अपने दोस्त के सामने उस की उस चीज़ का इज़्हार न कर जिस की वजह से तुझे तक्लीफ़ होती है क्यूं कि जब वोह तेरी किसी ना ज़ैबा ह़-र-कत को देखेगा तो तुझ से दुश्मनी करेगा (या'नी बदला लेगा)। न तो किसी अ़क़्ल मन्द से मज़ाक़ मस्ख़री कर कि वोह तुझ से ह़सद करने लग जाए, और न ही किसी बे वुक़ूफ़ का मज़ाक़ उड़ा कि वोह तुझ पर ही जुरअत कर बैठे, क्यूं कि हंसी मज़ाक़ रो'ब व दबदबे को दूर करता, मक़ाम व मर्तबे को गिरा देता, चेहरे की रोनक़ और आबो ताब ख़त्म करता, ग़म का सबब बनता, महब्बत की मिठास ख़त्म करता, समझदार की अ़क़्ल व फ़ह्म को ऐबदार करता, बे वुक़ूफ़ को जरी करता, अ़क़्ल व दिमाग़ को फ़ना

करता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूर करता, मज़म्मत व बुराई का बाइस बनता, ज़ब्त़ व तह़म्मुल ख़त्म करता, निय्यतों में फ़ुतूर डालता, दिलों को मुर्दा करता, गुनाहों की कसरत का सबब बनता और ख़ामियों को ज़ाहिर करता है।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करते हैं कि हमें हिदायत याफ़्ता लोगों की त़रह़ हिदायत अ़त़ा फ़रमा, आ़फ़िय्यत पाने वालों की त़रह़ आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा और हमारी भी ऐसी ही सर परस्ती फ़रमा जैसे दीगर की फ़रमाई, हमें जो कुछ अ़त़ा फ़रमाया उस में ब-र-कत दे, जो फ़ैसला फ़रमाया उस के शर से हमें मह़फ़ूज़ फ़रमाए क्यूं कि उस के फ़ैसले को कोई नहीं टाल सकता, जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़लील करे उसे कोई इ़ज़्ज़त नहीं दे सकता और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त दे उसे कोई ज़लील नहीं कर सकता। हमारा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बड़ी ब-र-कत और बुलन्दी वाला है, हम उस से मग़्फ़िरत चाहते हैं, उस की बारगाह में तौबा करते और उस की जनाब में अ़र्ज़ करते हैं कि अपने प्यारे मह़बूब, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हिदायत का परचम बुलन्द करने वाले आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर अफ़्ज़ल दुरूद और बहुत ज़ियादा सलाम भेजे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن، وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّي (اٰمين)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "तीन ख़स्लतें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श का साया अ़त़ा फ़रमाएगा, (1)...... दुश्वारी के वक़्त वुज़ू करना (2)...... अंधेरे में मस्जिदों की त़रफ़ चलना और (3)...... भूके को खाना खिलाना।" (الترغيب الترهيب، الحديث ١٤١٧،ج١، ص ٤٤٨)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा 143 कुतुब व रसाइल मअ़ अ़न्क़रीब आने वाली 20 कुतुब व रसाईल

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

उर्दू कुतुब :

1...... अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 250)
2...... करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)
3...... दुआ़ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَا لِأَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)
4...... वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوْق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)
5...... आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِيّ) (कुल सफ़ह़ात : 100)
6...... ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)
7...... सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَالِ) (कुल सफ़ह़ात : 63)
8...... विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَةُ) (कुल सफ़ह़ात : 60)
9...... शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)
10...... ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِ فِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)
11...... हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اعجب الامداد) (कुल सफ़ह़ात : 47)
12...... मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)
13...... राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)
14...... औलाद के हुक़ूक़ (مشعلة الارشاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

अ़-रबी कुतुब :

15, 16, 17, 18...... جَدُّ الْمُمْتَارِ عَلٰى رَدِّ الْمُحْتَارِ (المجلد الاول والثانی والثالث والرابع) (कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650)
19...... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّةِ (कुल सफ़ह़ात : 93)
20...... تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़ह़ात : 77)
21...... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ (कुल सफ़ह़ात : 74)
22...... اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़ह़ात : 70)
23...... اِقَامَةُ الْقِيَامَةِ (कुल सफ़ह़ात : 60)
24...... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)
25...... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِي (कुल सफ़ह़ात : 46)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

1...... जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (الزواجر عن اقتراف الكبائر) (कुल सफ़ह़ात : 853)
2...... जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِيْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ) (कुल सफ़ह़ात : 743)
3...... एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لباب الاحياء) (कुल सफ़ह़ात : 641)
4...... उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 412)
5...... आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع) (कुल सफ़ह़ात : 300)
6...... الدعوة الی الفکر (कुल सफ़ह़ात : 148)

7...... नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़हात : 138)

8...... म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रोशन फ़ैसले
(اَلْبَاهِرُ فِیْ حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر) (कुल सफ़हात : 112)

9...... राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّمْ) (कुल सफ़हात : 102)

10...... दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدُوَ قَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)

11...... हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 74)

12...... बेटे को नसीहत (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़हात : 64)

13...... शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़हात : 36)

14...... सायए अर्श किस किस को मिलेगा.....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْشِ فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 28)

15...... हिकायतें और नसीहतें (الروض الفائق) (कुल सफ़हात : 649)

16...... आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن) (कुल सफ़हात : 62)

(शो 'बए दर्सी कुतुब)

1...... اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه(كل صفحات:325)

2......نصاب الصرف (كل صفحات:343)

3...... اصول الشاشی مع احسن الحواشی(كل صفحات:299)

4......نحو ميرمع حاشيه نحو منير(كل صفحات:203)

5......دروس البلاغة مع شموس البراعة(كل صفحات:241)

6...... گلدسته عقائد واعمال (كل صفحات :180)

7...... مراح الارواح مع حاشيةضياء الاصباح (كل صفحات:241)

8......نصاب التجويد (كل صفحات:79)

9......نزهة النظر شرح نخبة الفكر (كل صفحات:280)

10......صرف بهائی مع حاشيه صرف بنائی(كل صفحات:55)

11 ......عناية النحو فی شرح هداية النحو(كل صفحات:175)

12......تعريفاتِ نحويه (كل صفحات:45)

13......الفرح الكامل علی شرح مئة عامل(كل صفحات: 158)

14......شرح مئة عامل(كل صفحات:44)

1......الاربعين النووية فی الأحاديث النبوية (كل صفحات:155)

16...... المحادثة العربية(كل صفحات:101)

17......نصاب النحو(كل صفحات : 288)

18......نصاب المنطق(كل صفحات: 168)

(शो 'बए तख़रीज)

1...... बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सए अव्वल ता शशुम, कुल सफ़हात : 1360)

2...... जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)

3...... अ़जाइबुल कु़रआन मअ़ ग़राइबुल कु़रआन (कुल सफ़हात : 422)

4...... बहारे शरीअ़त (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात : 312)

5...... सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का इश्के़ रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 274)

6...... इल्मुल कु़रआन (कुल सफ़हात : 244)

7...... जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़हात : 207)

8...... इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)

9...... तहक़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)

10...... अर बईने ह़-नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)

11...... आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

12...... अख़्लाक़ुस्सालिहीन (कुल सफ़हात : 78)

13...... किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)

14...... उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्हात : 59)
15...... अच्छे माहोल की ब-र-कतें (कुल सफ़्हात : 56)
16...... ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)
17 ता 23...... फ़तावा अहले सुन्नत (सात हि़स्से)
24...... बहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़्हात : 249)
25...... सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 875) 26...... बहारे शरीअ़त हि़स्सा 7 (कुल सफ़्हात : 133) 27...... बहारे शरीअ़त हि़स्सा 8 (कुल सफ़्हात : 206)
28...... करामाते सह़ाबा (कुल सफ़्हात : 346) 29...... सवानेहे़ करबला (कुल सफ़्हात : 192)
30...... बहारे शरीअ़त हि़स्सा 9 (कुल सफ़्हात : 218)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

1...... ज़ियाए स-दक़ात (कुल सफ़्हात : 408)
2...... फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़्हात : 325)
3...... रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 255)
4...... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 200)
5...... निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 196)
6...... तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़्हात : 187)
7...... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्हात : 164)
8...... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 160)
9...... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्हात : 152)
10...... तौबा की रिवायात व हि़कायात (कुल सफ़्हात : 124)
11...... फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस (कुल सफ़्हात : 120)
12...... ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ह़ालात (कुल सफ़्हात : 106)
13...... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)
14...... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 87)
15...... अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66)
16...... काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्हात : तक़रीबन 63)
17...... आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62)
18...... बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)
19...... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्हात : 43)
20...... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़्हात : 39)
21...... तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्हात : 33) 22...... टीवी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)
23...... इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्हात : 32) 24...... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)
25...... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़्हात : 150) 26...... रियाकारी (कुल सफ़्हात : 170)

(शो'बए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

1...... आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्हात : 275)
2...... क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 262)
3...... दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)
4...... शर्हे श-ज-रए क़ादिरिय्या (कुल सफ़्हात : 215)
5...... फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 101)
6...... तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 100)
7...... गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्हात : 55)
8...... तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़्हात : 49)
9...... तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2) (कुल सफ़्हात : 48)
10...... क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)
11...... ग़ाफ़िल दरज़ी (कुल सफ़्हात : 36)
12...... मैं ने म-दनी बुरक़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्हात : 33)
13...... क्रिस्चेन मुसल्मान हो गया (कुल सफ़्हात : 32)
14...... हेरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
15...... सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़्हात : 32)
16...... मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्हात : 32)
17...... बद नसीब दूल्हा (कुल सफ़्हात : 32)
18...... अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)
19...... हैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़्हात : 32)
20...... दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)
21...... क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़्हात : 24)
22...... तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़्हात : 86)
23...... मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़्हात : 32)
24...... फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(शो'बए म-दनी मुज़ा-करा)

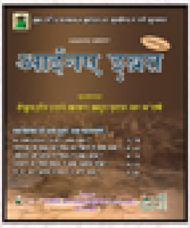
1...... वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इलाज (कुल सफ़्हात : 48)
2...... मुक़द्दस तह़रीरात के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)
3...... पानी के बारे अहम्म मा'लूमात (कुल सफ़्हात : 48)
4...... बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िक्मत (कुल सफ़्हात : 48)

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा

उ़न्वान	सफ़ह़ा









اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान** की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
مكتبة المدينة

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net